KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

HISTORY
THEME 03

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज (c. 600 BCE-600 CE)

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A terracotta sculpture depicting a scene from the Mahabharata (West Bengal), c. seventeenth century

महाभारत का एक दृश्य, *मृण्मयी मूर्तिकला (पश्चिम बंगाल) (लगभग सत्रहवीं शताब्दी)*

Extension of agriculture into forested areas transformed the lives of forest dwellers; craft specialists often emerged as distinct social groups; the unequal distribution of wealth sharpened social differences.

वन क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ जिससे वहाँ रहने वाले लोगों की जीवनशैली में परिवर्तन हुआ; शिल्प विशेषज्ञों के एक विशिष्ट सामाजिक समूह का उदय हुआ; तथा संपत्ति के असमान वितरण ने सामाजिक विषमताओं को अधिक प्रखर बनाया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A terracotta sculpture depicting a scene from the Mahabharata (West Bengal), c. seventeenth century

महाभारत का एक दृश्य, *मृण्मयी मूर्तिकला (पश्चिम बंगाल) (लगभग सत्रहवीं शताब्दी)*

Mahabharata, a colossal epic running in its present form into over 100,000 verses with depictions of a wide range of social categories and situations

महाभारत का विश्लेषण करते हुए हम अपना ध्यान एक ऐसे विशाल महाकाव्य पर केंद्रित कर रहे हैं जो अपने वर्तमान रूप में एक लाख श्लोकों से अधिक है और विभिन्न सामाजिक श्रेणियों व परिस्थितियों का लेखा-जोखा है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Texts lay down norms of social behaviour; others describe and occasionally comment on a wide range of social situations and practices.

कुछ ग्रंथ सामाजिक व्यवहार के मानदंड तय करते थे। अन्य ग्रंथ समाज का चित्रण करते थे और कभी-कभी समाज में मौजूद विभिन्न रिवाज़ों पर अपनी टिप्पणी भी प्रस्तुत करते थे।

A terracotta sculpture depicting a scene from the Mahabharata (West Bengal), c. seventeenth century

महाभारत का एक दृश्य, मृण्मयी मूर्तिकला (पश्चिम बंगाल) (लगभग सत्रहवीं शताब्दी)

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

THE CRITICAL EDITION OF THE MAHABHARATA

महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण

It meant collecting Sanskrit manuscripts of the text, written in a variety of scripts, from different parts of the country.

देश के विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियों को एकत्रित किया गया।

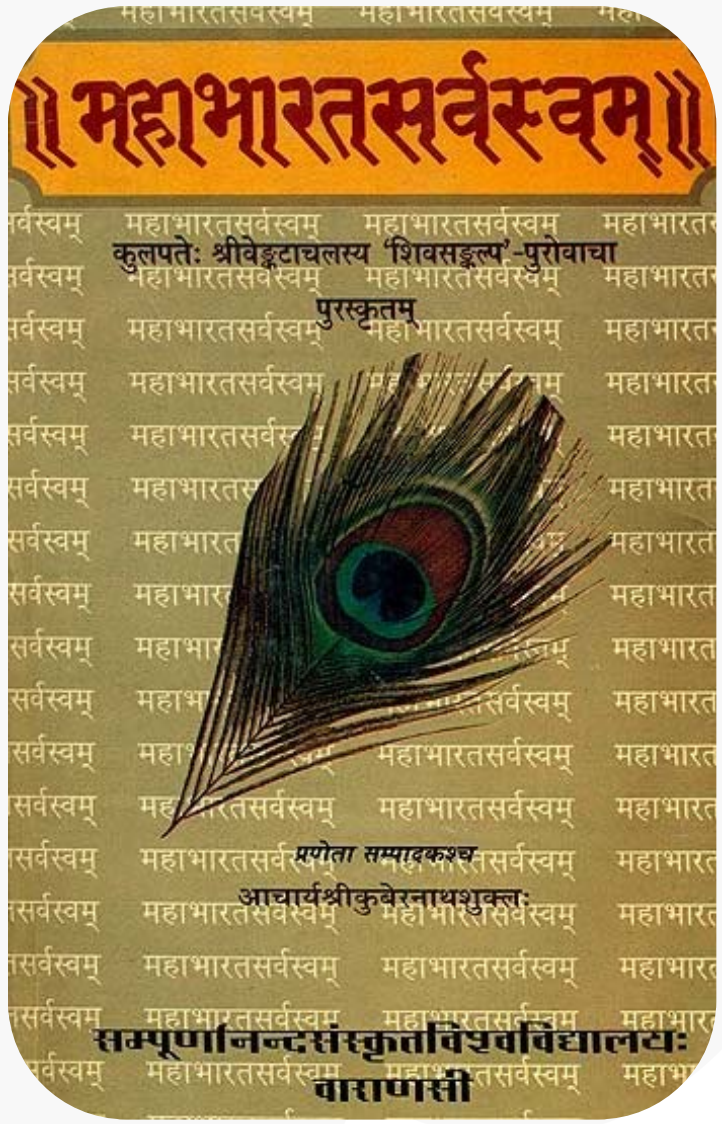

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

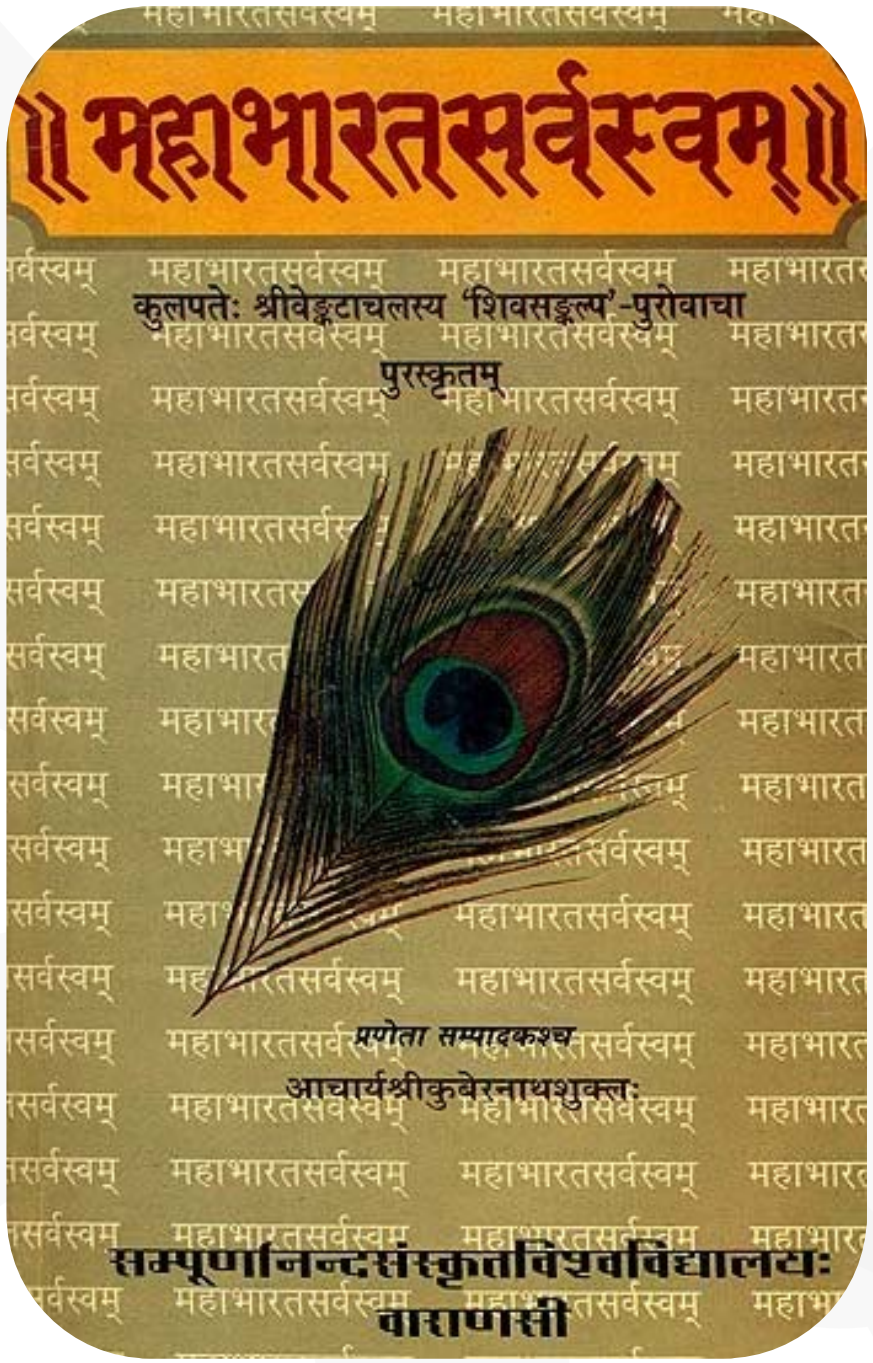

The project took 47 years to complete. Two things became apparent: there were several common elements in the Sanskrit versions of the story, evident in manuscripts found all over the subcontinent

इस परियोजना को पूरा करने में सैंतालीस वर्ष लगे। इस पूरी प्रक्रिया में दो बातें विशेष रूप से उभर कर आईं : पहली, संस्कृत के कई पाठों के अनेक अंशों में समानता थी। यह इस बात से ही स्पष्ट होता है कि समूचे उपमहाद्वीप में सभी पांडुलिपियों में यह समानता देखने में आई।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Kinship and Marriage (Many Rules and Varied Practices)

बंधुता एवं विवाह (अनेक नियम और व्यवहार की विभिन्नता)

Families are usually parts of larger networks of people defined as relatives, or to use a more technical term, kinfolk.

परिवार एक बड़े समूह का हिस्सा होते हैं जिन्हें हम संबंधी कहते हैं। तकनीकी भाषा का इस्तेमाल करें तो हम संबंधियों को जाति समूह कह सकते हैं।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Terms for family and kin

Sanskrit texts use the term kula to designate families and jnati for the larger network of kinfolk. The term vamsha is used for lineage.

परिवार और बंधुता के लिए प्रयुक्त शब्द

संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग परिवार के लिए और 'जाति' का बांधवों के बड़े समूह के लिए होता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी किसी भी कुल के पूर्वज इकट्ठे रूप में एक ही वंश के माने जाते हैं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Patriliny means tracing descent from father to son, grandson and so on. Matriliny is the term used when descent is traced through the mother.

पितृवंशिकता का अर्थ है वह वंश परंपरा जो पिता के पुत्र फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती है। मातृवंशिकता शब्द का इस्तेमाल हम तब करते हैं जहाँ वंश परंपरा माँ से जुड़ी होती है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mahabharata

महाभारत

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

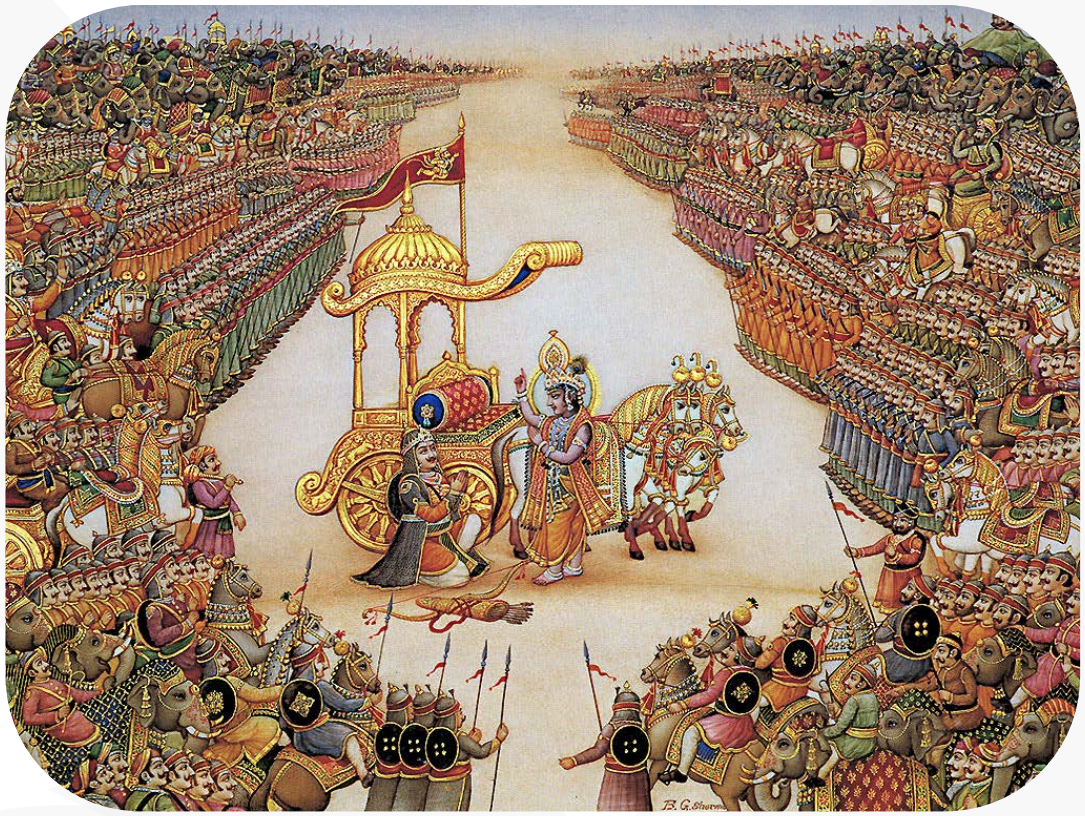

Feud over land and power between two groups of cousins, the Kauravas and the Pandavas, who belonged to a single ruling family, that of the Kurus, a lineage dominating one of the janapadas

यह बांधवों के दो दलों–कौरव और पांडव–के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए संघर्ष का चित्रण करती है। दोनों ही दल कुरु वंश से संबंधित थे जिनका एक जनपद पर शासन था।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Conflict ended in a battle, in which the Pandavas emerged victorious. After that, patrilineal succession was proclaimed.

यह संघर्ष एक युद्ध में परिणत हुआ जिसमें पांडव विजयी हुए। इनके उपरांत पितृवंशिक उत्तराधिकार को उद्घोषित किया गया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Under patriliny, sons could claim the resources (including the throne in the case of kings) of their fathers when the latter died.

पितृवंशिकता में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उनके संसाधनों पर (राजाओं के संदर्भ में सिंहासन भी) अधिकार जमा सकते थे।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Under patriliny, sons could claim the resources (including the throne in the case of kings) of their fathers when the latter died.

पितृवंशिकता में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उनके संसाधनों पर (राजाओं के संदर्भ में सिंहासन भी) अधिकार जमा सकते थे।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Producing "fine sons"

Here is an excerpt of a mantra from the Rigveda, which was probably inserted in the text c. 1000 BCE, to be chanted by the priest while conducting the marriage ritual. It is used in many Hindu weddings even today:

'उत्तम पुत्रों' का प्रजनन

यहाँ ऋग्वेद से एक मंत्र का अंश उद्धृत है जो इस ग्रंथ में संभवतः लगभग 1000 ई.पू. में जोड़ा गया था। विवाह संस्कार के दौरान यह मंत्र पुरोहित द्वारा पढ़ा जाता था। आज भी अनेक हिंदू विवाह संस्कारों में इसका प्रयोग होता है :

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

I free her from here, but not from there. I have bound her firmly there, so that through the grace of Indra she will have fine sons and be fortunate in her husband's love.

मैं इसे यहाँ से मुक्त करता हूँ किंतु वहाँ से नहीं। मैंने इसे वहाँ मज़बूती से स्थापित किया है जिससे इंद्र के अनुग्रह से इसके उत्तम पुत्र हों और पति के प्रेम का सौभाग्य इसे प्राप्त हो।

Indra was one of the principal deities, a god of valour, warfare and rain. "Here" and "there" refer to the father's and husband's house respectively.

इंद्र शौर्य, युद्ध और वर्षा के एक प्रमुख देवता थे। 'यहाँ' और 'वहाँ' से तात्पर्य पिता और पति के गृह से है।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

However, after the premature death of Pandu, Dhritarashtra became king, as the royal princes were still very young. As the princes grew up together, the citizens of Hastinapura began to express their preference for the Pandavas, for they were more capable and virtuous than the Kauravas.

किंतु पांडु की असामयिक मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र राजा बने, क्योंकि सभी राजकुमार अल्पवयस्क थे। जैसे-जैसे राजकुमार बड़े हुए हस्तिनापुर के नागरिक पांडवों के प्रति अपनी अभिरुचि व्यक्त करने लगे क्योंकि वे कौरवों के मुकाबले अधिक योग्य और सदाचारी थे।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Why kinfolk quarrelled

This is an excerpt from the Adi Parvan (literally, the first section) of the Sanskrit Mahabharata, describing why conflicts arose amongst the Kauravas and Pandavas:

स्वजन के मध्य लड़ाई क्यों हुई?

यह उद्धरण संस्कृत महाभारत के आदिपर्वन् (प्रथम अध्याय) से है और कौरव पांडव के बीच हुए संघर्ष का चित्रण करता है:

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The Kauravas were the ... sons of Dhritarashtra, and the Pandavas ... were their cousins. Since Dhritarashtra was blind, his younger brother Pandu ascended the throne of Hastinapura

कौरव...धृतराष्ट्र के पुत्र थे और पांडव उनके बांधव जन थे। चूँकि धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे अतः उनके अनुज पांडु हस्तिनापुर के सिंहासन पर आसीन हुए।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

This made Duryodhana, the eldest of the Kauravas, jealous. He approached his father and said, "You yourself did not receive the throne, although it fell to you, because of your defect.

इस बात से कौरवों में ज्येष्ठ, दुर्योधन को बहुत ईर्ष्या हुई। वह अपने पिता के पास गया और बोला, "हे भूपति, अपूर्णता के कारण आपको सिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं था हालाँकि यह आपको प्राप्त हो गया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

If the Pandava receives the patrimony from Pandu, his son will surely inherit it in turn, and so will his son, and his. We ourselves with our sons shall be excluded from the royal succession and become of slight regard in the eyes of the world, lord of the earth!

यदि पांडव पांडु से यह विरासत प्राप्त करते हैं तो उनके बाद उनके पुत्र, पौत्र और फिर प्रपौत्र इस पैतृक संपत्ति के अधिकारी हो जाएँगे और हम तथा हमारे पुत्र इस राज्य के उत्तराधिकार से बेदखल होकर संसार में क्षुद्र समझे जाएँगे।"

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Passages such as these may not have been literally true, but they give us an idea about what those who wrote the text thought. Sometimes, as in this case, they contain conflicting ideas.

इस तरह के उद्धरण अक्षरशः सत्य न भी हों तो भी वे इस बात का अनुमान करा देते हैं कि जिन लोगों ने यह ग्रंथ लिखा वे क्या सोचते थे। कभी-कभी, जैसे यहाँ, प्रकरणों में परस्पर विरोधी विचार मिलते हैं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Sons were important for the continuity of the patrilineage, daughters were viewed rather differently within this framework. They had no claims to the resources of the household.

जहाँ पितृवंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्र महत्वपूर्ण थे वहाँ इस व्यवस्था में पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। पैतृक संसाधनों पर उनका कोई अधिकार नहीं था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Marrying them into families outside the kin was considered desirable. This system, called exogamy (literally, marrying outside), meant that the lives of young girls and women belonging to families that claimed high status were often carefully regulated to ensure that they were married at the "right" time and to the "right" person.

अपने गोत्र से बाहर उनका विवाह कर देना ही अपेक्षित था। इस प्रथा को बहिर्विवाह पद्धति कहते हैं और इसका तात्पर्य यह था कि ऊँची प्रतिष्ठा वाले परिवारों की कम उम्र की कन्याओं और स्त्रियों का जीवन बहुत सावधानी से नियमित किया जाता था जिससे 'उचित' समय और 'उचित' व्यक्ति से उनका विवाह किया जा सके।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

This gave rise to the belief that kanyadana or the gift of a daughter in marriage was an important religious duty of the father.

इसका प्रभाव यह हुआ कि कन्यादान अर्थात् विवाह में कन्या की भेंट को पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना गया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Types of marriages

Endogamy refers to marriage within a unit – this could be a kin group, caste, or a group living in the same locality.

Exogamy refers to marriage outside the unit.

विवाह के प्रकार

अंतर्विवाह में वैवाहिक संबंध समूह के मध्य ही होते हैं। यह समूह एक गोत्र कुल अथवा एक जाति या फिर एक ही स्थान पर बसने वालों का हो सकता है।

बहिर्विवाह गोत्र से बाहर विवाह करने को कहते हैं।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Polygyny is the practice of a man having several wives.

बहुपत्नी प्रथा एक पुरुष की अनेक पत्नियाँ होने की सामाजिक परिपाटी है।

Polyandry is the practice of a woman having several husbands.

बहुपति प्रथा एक स्त्री के अनेक पति होने की पद्धति है।

Eight forms of marriage

Here are the first, fourth, fifth and sixth forms of marriage from the Manusmriti:

First: The gift of a daughter, after dressing her in costly clothes and honouring her with presents of jewels, to a man learned in the Veda whom the father himself invites.

विवाह के आठ प्रकार

यहाँ मनुस्मृति से पहली, चौथी, पाँचवीं और छठी विवाह पद्धति का उद्धरण दिया जा रहा है :

पहली : कन्या का दान, बहुमूल्य वस्त्रों और अलंकारों से विभूषित कर उसे वेदज्ञ वर को दान दिया जाए जिसे पिता ने स्वयं आमंत्रित किया हो।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Fourth: The gift of a daughter by the father after he has addressed the couple with the text, "May both of you perform your duties together", and has shown honour to the bridegroom

चौथी : पिता वर-वधू युगल को यह कहकर संबोधित करता है कि : "तुम साथ मिलकर अपने दायित्वों का पालन करो।" तत्पश्चात वह वर का सम्मान कर उसे कन्या का दान करता है।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Fifth: When the bridegroom receives a maiden, after having given as much wealth as he can afford to the kinsmen and to the bride herself, according to his own will.

पाँचवीं : वर को वधू की प्राप्ति तब होती है जब वह अपनी क्षमता व इच्छानुसार उसके बांधवों को और स्वयं वधू को यथेष्ट धन प्रदान करता है।

Sixth: The voluntary union of a maiden and her lover ... which springs from desire ...

छठीं : स्त्री और पुरुष के बीच अपनी इच्छा से संयोग... जिसकी उत्पत्ति काम से है...

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmanas responded by laying down codes of social behaviour in great detail.

ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिताएँ तैयार कीं।

Norms were compiled in Sanskrit texts known as the Dharmasutras and Dharmashastras.

इन मानदंडों का संकलन धर्मसूत्र व धर्मशास्त्र नामक संस्कृत ग्रंथों में किया गया।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmana authors of these texts claimed that their point of view had universal validity and that what they prescribed had to be obeyed by everybody

ब्राह्मण लेखकों का यह मानना था कि उनका दृष्टिकोण सार्वभौमिक है और उनके बनाए नियमों का सबके द्वारा पालन होना चाहिए, किंतु वास्तविक सामाजिक संबंध कहीं अधिक जटिल थे।

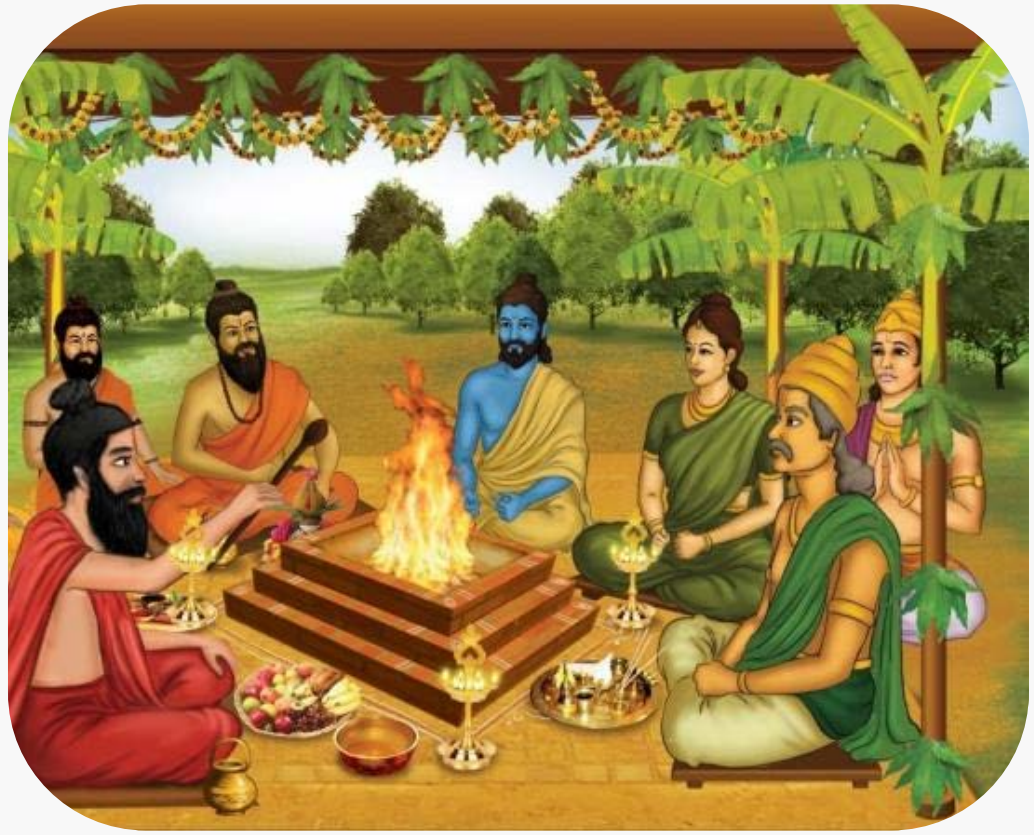

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Dharmasutras and Dharmashastras recognised as many as eight forms of marriage.

धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र विवाह के आठ प्रकारों को अपनी स्वीकृति देते हैं।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

First four were considered as "good" while the remaining were condemned. It is possible that these were practised by those who did not accept Brahmanical norms.

पहले चार 'उत्तम' माने जाते थे और बाकियों को निंदित माना गया। संभव है कि ये विवाह पद्धतियाँ उन लोगों में प्रचलित थीं जो ब्राह्मणीय नियमों को अस्वीकार करते थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Classify people

लोगों

In terms of gotras

गोत्रों में वर्गीकृत करने की थी

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

All those who belonged to the same gotra were regarded as his descendants.

उस गोत्र के सदस्य ऋषि के वंशज माने जाते थे।

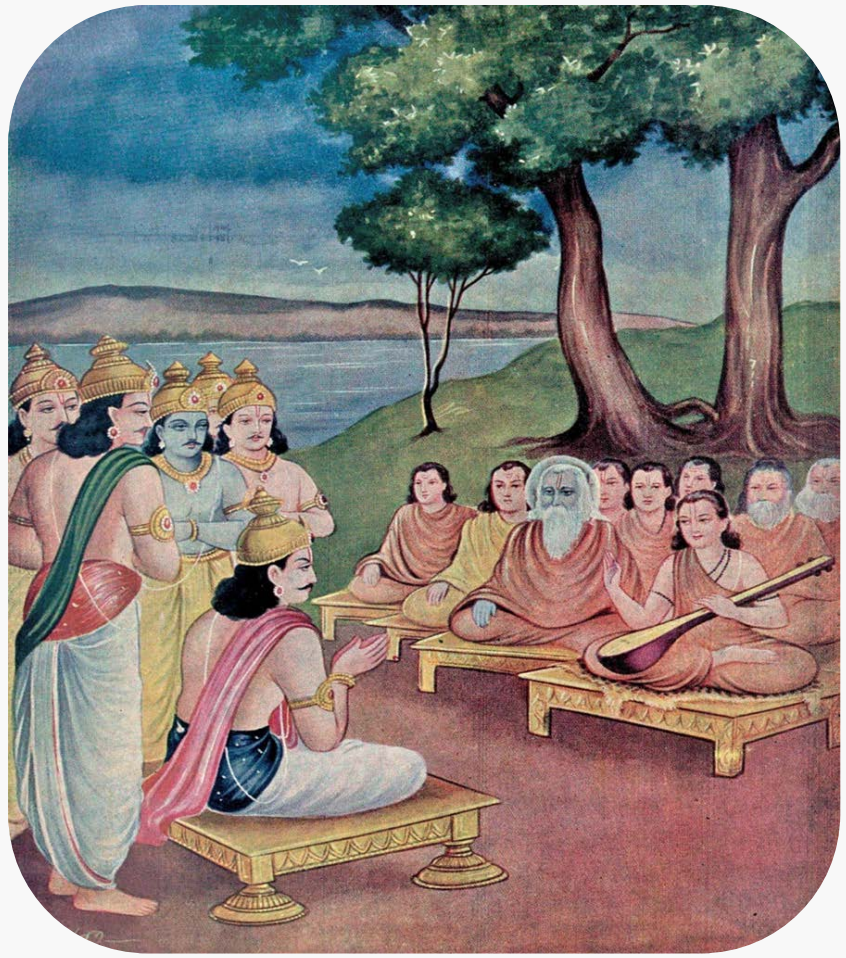

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Women were expected to give up their father's gotra and adopt that of their husband on marriage and members of the same gotra could not marry.

स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था तथा एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Names of Satavahana kings from inscriptions

These are the names of several generations of Satavahana rulers, recovered from inscriptions. Note the uniform title raja.

अभिलेखों से सातवाहन राजाओं के नाम

अभिलेखों से सातवाहन राजाओं की कई पीढ़ियों के नाम प्राप्त हुए हैं। इन सभी नामों में राजा की एक जैसी पदवी पर ध्यान दीजिए।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Also note the following word, which ends with the term puta, a Prakrit word meaning "son". The term Gotami-puta means "son of Gotami". Names like Gotami and Vasithi are feminine forms of Gotama and Vasistha, Vedic seers after whom gotras were named.

इसके अलावा अगले शब्द को भी लक्षित कीजिए जिसका पुत्त से अंत होता है। यह एक प्राकृत शब्द है जिसका अर्थ 'पुत्र' है। गोतमी-पुत्त का अर्थ है 'गोतमी का पुत्र'। गोतमी और वसिथि स्त्रीवाची नाम हैं गौतम और वशिष्ठ के। ये दोनों वैदिक ऋषि थे जिनके नाम से गोत्र हैं।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Raja Gotami-puta Siri-Satakani /

राजा गोतमी–पुत्त सिरी–सातकनि

Raja Vasithi-puta (sami-) Siri-Pulumayi /

राजा वसिथि–पुत्त (सामि) सिरि–पुलुमायि

Raja Gotami-puta sami-Siri-Yana-Satakani /

राजा गोतमी–पुत्त सामि–सिरि–यन–सातकनि

Raja Madhari-puta svami-Sakasena /

राजा मधारि–पुत्त स्वामि–सकसेन

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Raja Vasathi-puta Chatarapana-Satakani

राजा हरिति-पुत्त चत्तरपन-सातकनि

Raja Hariti-puta Vinhukada Chutukulanamda-Satakamni

राजा हरिति-पुत्त विनहुकद चतुकुलानम्द-सातकमनि

Raja Gotami-puta Siri-Vijaya- Satakani

राजा गोतमी-पुत्त सिरी-विजय-सातकनि

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A Satavahana ruler and his wife This is one of the rare sculptural depictions of a ruler from the wall of a cave donated to Buddhist monks. This sculpture dates to c. second century BCE.

एक सातवाहन राजा तथा उसकी पत्नी सातवाहन राजाओं की आकृतियाँ बहुधा उन गुफाओं की भित्तियों पर उत्कीर्ण की जाती थीं जिन्हें बौद्ध भिक्षुओं को दान में दिया जाता था। यह मूर्ति लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की है।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Metronymics in the Upanishads

The Brihadaranyaka Upanishad, one of the earliest Upanishads (see also Chapter 4), contains a list of successive generations of teachers and students, many of whom were designated by metronymics.

उपनिषद में मातृनाम

बृहदारण्यक उपनिषद में जो आरंभिक उपनिषदों में से एक है (देखिए अध्याय 4) आचार्यों और शिष्यों की उत्तरोत्तर पीढ़ियों की सूची मिलती है, जिसमें से कई लोगों को उनके मातृनामों से निर्दिष्ट किया गया था।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Satavahana rulers were polygynous (that is, had more than one wife)

सातवाहन राजा बहुपत्नी प्रथा (अर्थात् एक से अधिक पत्नी) को मानने वाले थे।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

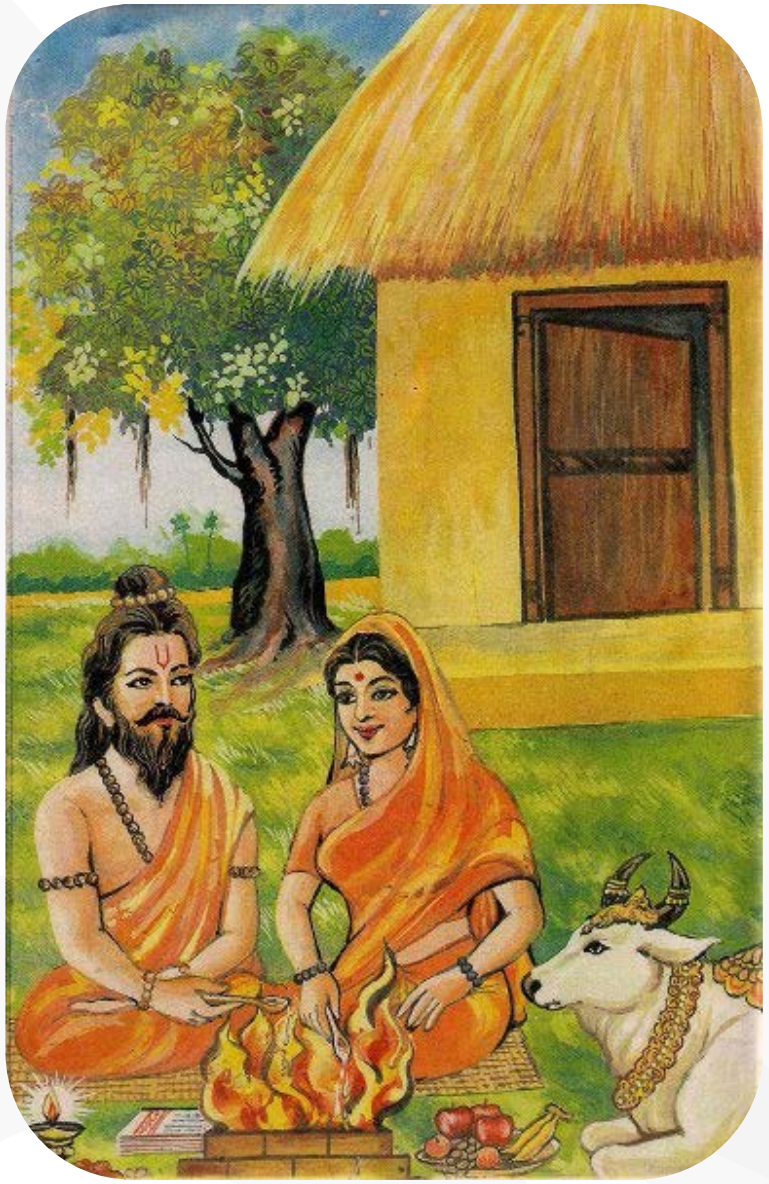

Women who married Satavahana rulers indicates that many of them had names derived from gotras such as Gotama and Vasistha, their father's gotras.

सातवाहन राजाओं से विवाह करने वाली रानियों के नामों का विश्लेषण इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि उनके नाम गौतम तथा वसिष्ठ गोत्रों से उद्भूत थे जो उनके पिता के गोत्र थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Endogamy or marriage within the kin group, which was (and is) prevalent amongst several communities in south India.

वैकल्पिक प्रथा अंतर्विवाह पद्धति अर्थात् बंधुओं में विवाह संबंध को दर्शाता है जिसका प्रचलन दक्षिण भारत के कई समुदायों में (भी) है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

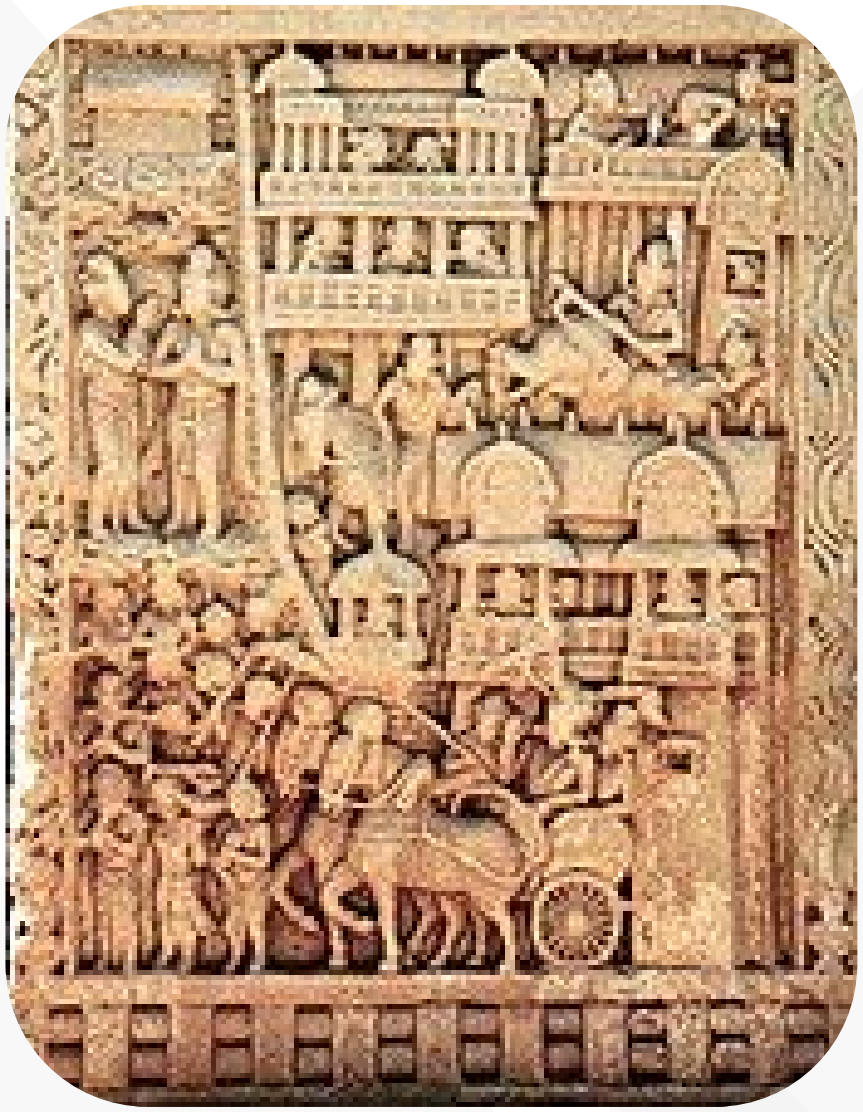

Satavahana rulers were identified through metronymics (names derived from that of the mother). Although this may suggest that mothers were important

सातवाहन राजाओं को उनके मातृनाम (माता के नाम से उद्भूत) से चिह्नित किया जाता था। इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Satavahanas we know that succession to the throne was generally patrilineal.

सातवाहन राजाओं के संदर्भ में हमें यह ज्ञात है कि सिंहासन का उत्तराधिकार पितृवंशिक होता था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A battle scene This is amongst the earliest sculptural depictions of a scene from the Mahabharata, a terracotta sculpture from the walls of a temple in Ahichchhatra (Uttar Pradesh), c. fifth century CE.

एक युद्ध का दृश्य यह महाभारत के दृश्यों के सबसे प्राचीन मूर्ति चित्रणों में से एक है। यह मिट्टी की मूर्ति अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश) के एक मंदिर की दीवार पर उत्कीर्ण है जो लगभग पाँचवीं शताब्दी ईसवी की है।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

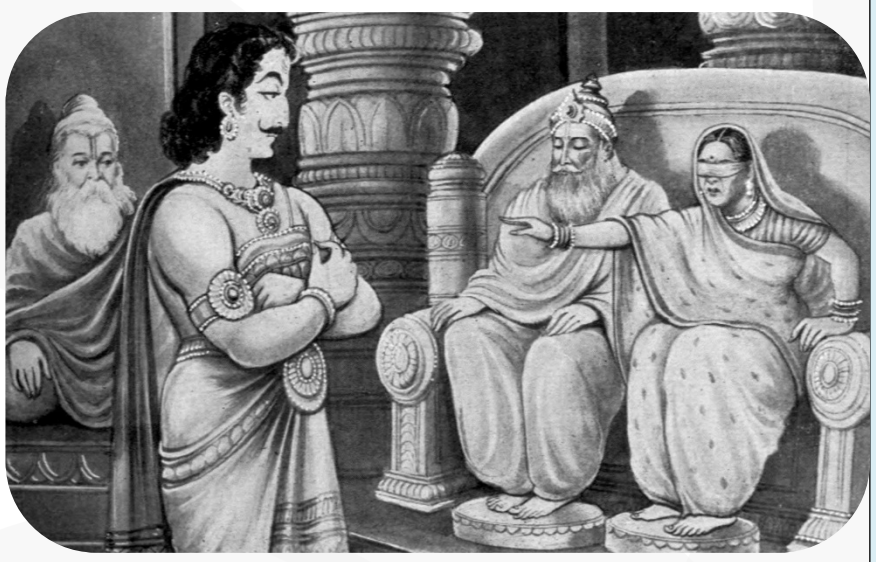

A mother's advice

The Mahabharata describes how, when war between the Kauravas and the Pandavas became almost inevitable, Gandhari made one last appeal to her eldest son Duryodhana:

माता की सलाह

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि जब कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध अवश्यंभावी हो गया तो गांधारी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन से युद्ध न करने की विनती की :

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

By making peace you honour your father and me, as well as your well-wishers ... it is the wise man in control of his senses who guards his kingdom. Greed and anger drag a man away from his profits; by defeating these two enemies a king conquers the earth

शांति की संधि करके तुम अपने पिता, मेरा तथा अपने शुभेच्छुकों का सम्मान करोगे.... विवेकी पुरुष जो अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखता है वही अपने राज्य की रखवाली करता है। लालच और क्रोध आदमी को लाभ से दूर खदेड़कर ले जाते हैं; इन दोनों शत्रुओं को पराजित कर राजा समस्त पृथ्वी को जीत सकता है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

You will happily enjoy the earth, my son, along with the wise and heroic Pandavas ... There is no good in a war, no law (dharma) and profit (artha), let alone happiness; nor is there (necessarily) victory in the end – don't set your mind on war.

हे पुत्र तुम विवेकी और वीर पांडवों के साथ सानंद इस पृथ्वी का भोग करोगे... युद्ध में कुछ भी शुभ नहीं होता, ना धर्म और अर्थ की प्राप्ति होती है और ना ही प्रसन्नता की; युद्ध के अंत में सफलता मिले यह भी ज़रूरी नहीं... अपने मन को युद्ध में लिप्त मत करो...

Duryodhana did not listen to this advice and fought and lost the war.

दुर्योधन ने माँ की सलाह नहीं मानी, वह युद्ध में लड़ा और हार गया।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Social Differences: Within and Beyond the Framework of Caste

सामाजिक विषमताएँ वर्ण व्यवस्था के दायरे में और उससे परे

Caste, which refers to a set of hierarchically ordered social categories.

'जाति' शब्द से परिचित होंगे जो एक सोपानात्मक सामाजिक वर्गीकरण को दर्शाता है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

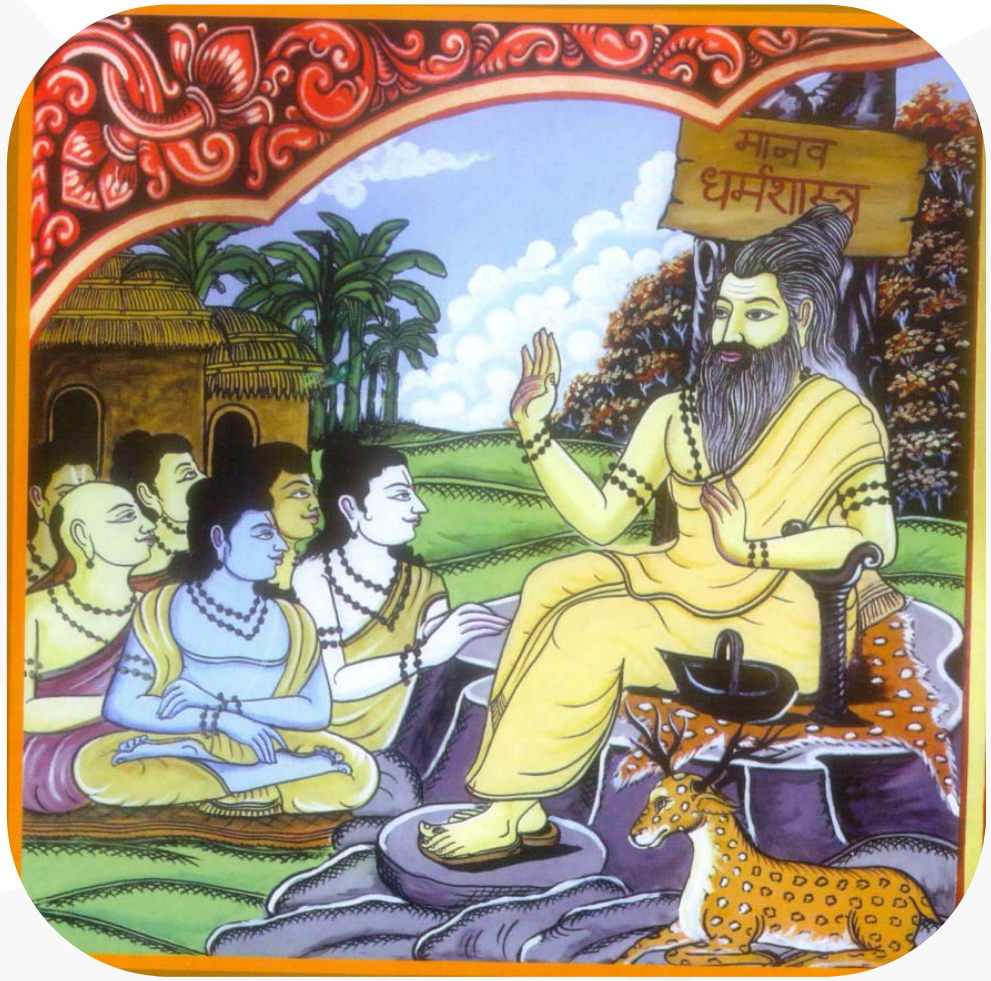

Ideal order was laid down in the Dharmasutras and Dharmashastras.

धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmanas claimed that this order, in which they were ranked first, was divinely ordained, while placing groups classified as Shudras and "untouchables" at the very bottom of the social order. Positions within the order were supposedly determined by birth.

ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्ज़ा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है। शूद्रों और 'अस्पृश्यों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था। इस व्यवस्था में दर्ज़ा संभवतः जन्म के अनुसार निर्धारित माना जाता था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmanas were supposed to study and teach the Vedas, perform sacrifices and get sacrifices performed, and give and receive gifts.

ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा, यज्ञ करना और करवाना था तथा उनका काम दान देना और लेना था।

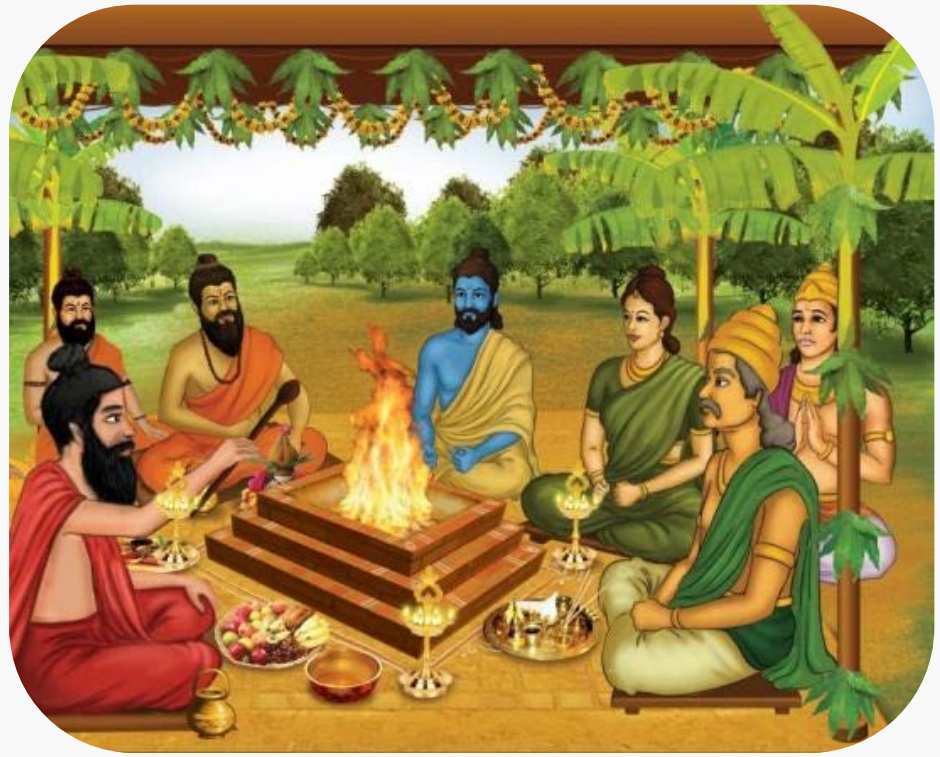

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Kshatriyas were to engage in warfare, protect people and administer justice, study the Vedas, get sacrifices performed, and make gifts.

क्षत्रियों का कर्म युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, वेद पढ़ना, यज्ञ करवाना और दान-दक्षिणा देना था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

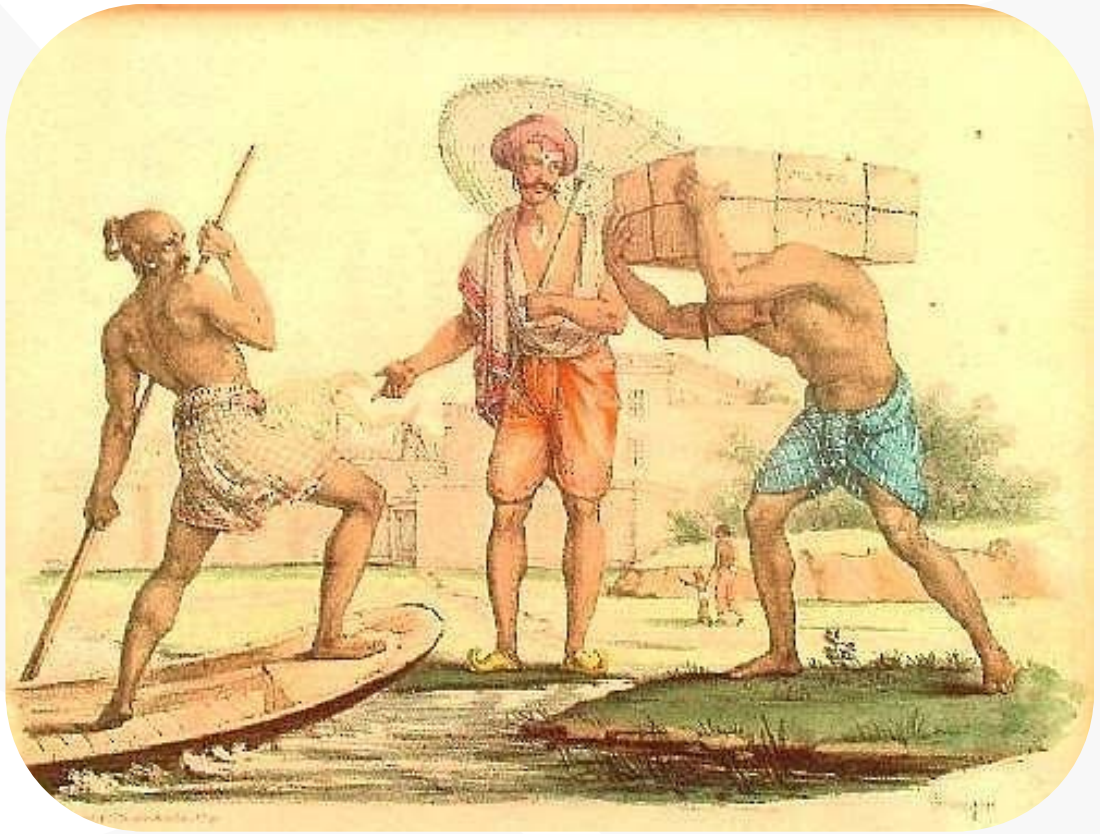

Vaishyas, who were in addition expected to engage in agriculture, pastoralism and trade. Shudras were assigned only one occupation – that of serving the three "higher" varnas.

वैश्यों के लिए भी थे साथ ही उनसे कृषि, गौ-पालन और व्यापार का कर्म भी अपेक्षित था। शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी–तीनों 'उच्च' वर्णों की सेवा करना।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

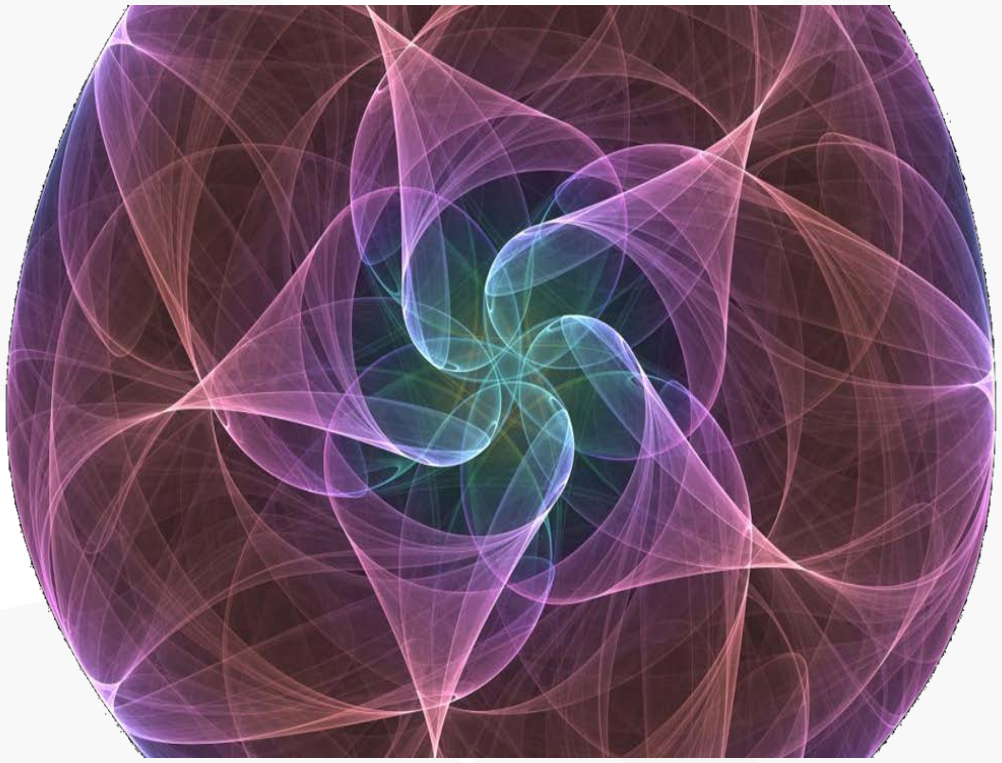

A divine order?

To justify their claims, Brahmanas often cited a verse from a hymn in the Rigveda known as the Purusha sukta, describing the sacrifice of Purusha, the primeval man.

एक दैवीय व्यवस्था?

अपनी मान्यता को प्रमाणित करने के लिए ब्राह्मण बहुधा ऋग्वेद के पुरुषसूक्त मंत्र को उद्धृत करते थे जो आदि मानव पुरुष की बलि का चित्रण करता है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

All the elements of the universe, including the four social categories, were supposed to have emanated from his body:

जगत के सभी तत्व जिनमें चारों वर्ण शामिल हैं, इसी पुरुष के शरीर से उपजे थे।

The Brahmana was his mouth, of his arms was made the Kshatriya.

ब्राह्मण उसका मुँह था, उसकी भुजाओं से क्षत्रिय निर्मित हुआ।

His thighs became the Vaishya, of his feet the Shudra was born.

वैश्य उसकी जंघा थी, उसके पैर से शूद्र की उत्पत्ति हुई।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

"Proper" social roles

Here is a story from the Adi Parvan of the Mahabharata: Once Drona, a Brahmana who taught archery to the Kuru princes, was approached by Ekalavya, a forestdwelling nishada (a hunting community). When Drona, who knew the dharma, refused to have him as his pupil

'उचित' सामाजिक कर्तव्य

महाभारत के आदिपर्वन् से एक कहानी उद्धृत है : एक बार ब्राह्मण द्रोण के पास, जो कुरु वंश के राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे, एकलव्य नामक वनवासी निषाद (शिकारी समुदाय) आया। द्रोण ने जो धर्म समझते थे, उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Ekalavya returned to the forest, prepared an image of Drona out of clay, and treating it as his teacher, began to practise on his own. In due course, he acquired great skill in archery. One day, the Kuru princes went hunting and their dog, wandering in the woods, came upon Ekalavya.

एकलव्य ने वन में लौट कर मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई तथा उसे अपना गुरु मान कर वह स्वयं ही तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। समय के साथ वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया। एक दिन कुरु राजकुमार अपने कुत्ते के साथ जंगल में शिकार करते हुए एकलव्य के समीप पहुँच गए।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

When the dog smelt the dark nishada wrapped in black deer skin, his body caked with dirt, it began to bark. Annoyed, Ekalavya shot seven arrows into its mouth. When the dog returned to the Pandavas, they were amazed at this superb display of archery. They tracked down Ekalavya, who introduced himself as a pupil of Drona.

कुत्ता काले मृग की चमड़ी के वस्त्र में लिपटे निषाद को देखकर भौंकने लगा। क्रोधित होकर एकलव्य ने एक साथ सात तीर चलाकर उसका मुँह बंद कर दिया। जब वह कुत्ता लौटा तो पांडव तीरंदाज़ी का यह अद्भुत दृश्य देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने एकलव्य को तलाशा, उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Drona had once told his favourite student Arjuna, that he would be unrivalled amongst his pupils. Arjuna now reminded Drona about this. Drona approached Ekalavya, who immediately acknowledged and honoured him as his teacher.

द्रोण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से एक बार यह कहा था कि वह उनके सभी शिष्यों में अद्वितीय तीरंदाज़ बनेगा। अर्जुन ने द्रोण को उनका यह प्रण याद दिलाया। द्रोण एकलव्य के पास गए जिसने उन्हें अपना गुरु मानकर प्रणाम किया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

When Drona demanded his right thumb as his fee, Ekalavya unhesitatingly cut it off and offered it. But thereafter, when he shot with his remaining fingers, he was no longer as fast as he had been before. Thus, Drona kept his word: no one was better than Arjuna.

तब द्रोण ने गुरु दक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने फ़ौरन गुरु को अपना अँगूठा काट कर दे दिया। अब एकलव्य तीर चलाने में उतना तेज़ नहीं रहा। इस तरह द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निभाया : कोई भी अर्जुन से बेहतर धनुर्धारी नहीं रहा।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

According to the Shastras, only Kshatriyas could be kings

शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mauryas, who ruled over a large empire, has been hotly debated. While later Buddhist texts suggested they were Kshatriyas, Brahmanical texts described them as being of "low" origin.

मौर्य वंश जिसने एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया, के उद्भव पर गर्मजोशी से बहस होती रही है। बाद के बौद्ध ग्रंथों में यह इंगित किया गया है कि वे क्षत्रिय थे किंतु ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें 'निम्न' कुल का मानते हैं।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Jati, like varna, was based on birth.

जाति भी जन्म पर आधारित थी।

Number of varnas was fixed at four, there was no restriction on the number of jatis.

वर्ण जहाँ मात्र चार थे वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Silver coin depicting a Shaka ruler, c. fourth century CE

शक शासक को चित्रित करता चाँदी का सिक्का, लगभग चौथी शताब्दी ईसवी

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Jatis which shared a common occupation or profession were sometimes organised into shrenis or guilds.

वे जातियाँ जो एक ही जीविका अथवा व्यवसाय से जुड़ी थीं उन्हें कभी-कभी श्रेणियों में भी संगठित किया जाता था।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The case of the merchants

Sanskrit texts and inscriptions used the term vanik to designate merchants. While trade was defined as an occupation for Vaishyas in the Shastras, a more complex situation is evident in plays

वणिकों की स्थिति

संस्कृत के ग्रंथ और अभिलेखों में व्यापारियों के लिए वणिक शब्द प्रयुक्त किया जाता है। हालाँकि शास्त्रों में व्यापार को वैश्यों की जीविका बताया जाता है अन्य स्रोतों में अधिक जटिल परिस्थिति देखने को मिलती है।

such as the Mrichchhakatika written by Shudraka (c. fourth century CE), Here, the hero Charudatta was described as both a Brahmana and a sarthavaha or merchant And a fifth-century inscription describes two brothers who made a donation for the construction of a temple as kshatriya-vaniks.

जैसे शूद्रक के नाटक मृच्छकटिकम् (लगभग चौथी शताब्दी ईसवी) में नायक चारुदत्त को ब्राह्मण–वणिक बताया गया है। पाँचवीं शताब्दी ईसवी के एक अभिलेख में दो भाइयों को क्षत्रिय–वणिक कहा गया है, जिन्होंने एक मंदिर के निर्माण के लिए धन दिया।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

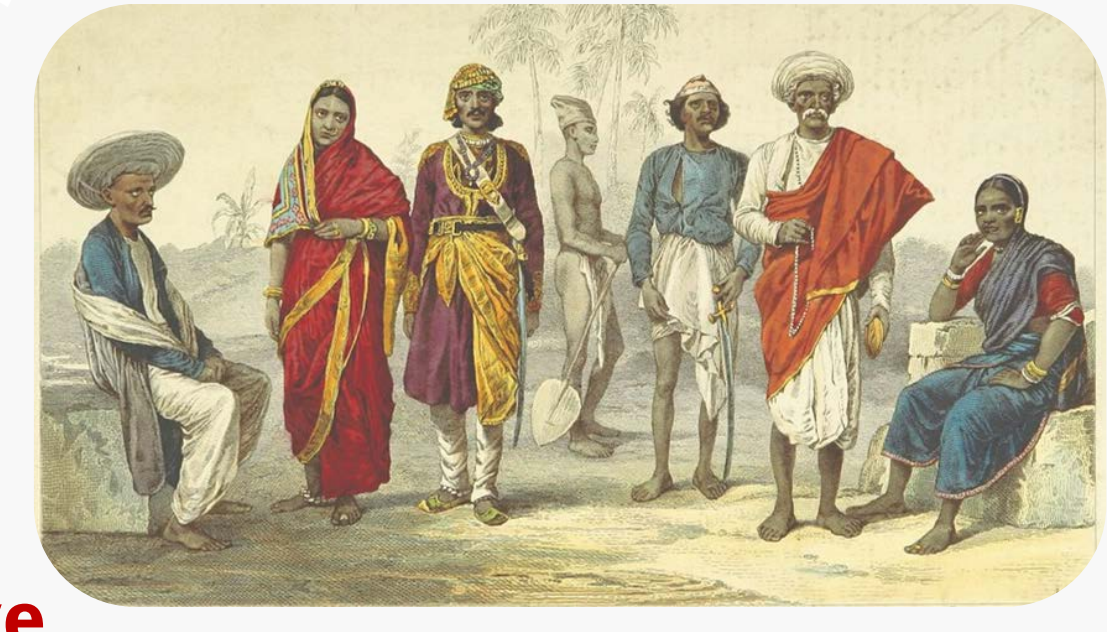

There were, and always have been, populations whose social practices were not influenced by Brahmanical ideas.

यहाँ हमेशा से ऐसे समुदाय रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Who spoke non-Sanskritic languages were labelled as mlechchhas and looked down upon

यदा-कदा उन लोगों को जो असंस्कृत भाषी थे, उन्हें मलेच्छ कहकर हेय दृष्टि से देखा जाता था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

These included forest-dwellers – for whom hunting and gathering remained an important means of subsistence.

ऐसे कुछ उदाहरण वन प्रांतर में बसने वाले लोगों के हैं जिनके लिए शिकार और कंद-मूल संग्रह करना जीवन-निर्वाह का महत्वपूर्ण साधन था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A tiger-like husband

This is a summary of a story from the Adi Parvan of the Mahabharata:

The Pandavas had fled into the forest. They were tired and fell asleep; only Bhima, the second Pandava, renowned for his prowess, was keeping watch. A man-eating rakshasa caught the scent of the Pandavas and sent his sister Hidimba to capture them

बाघ सदृश पति

यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन् से उद्धृत कहानी का है :

पांडव गहन वन में चले गए थे। थक कर वे सो गए; केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे। एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष गंध ने विचलित किया और उसने अपनी बहन हिडिम्बा को उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा।

She fell in love with Bhima, transformed herself into a lovely maiden and proposed to him. He refused. Meanwhile, the rakshasa arrived and challenged Bhima to a wrestling match. Bhima accepted the challenge and killed him.

हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गई और एक सुंदर स्त्री के वेष में उसने भीम से विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस बीच राक्षस वहाँ आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The others woke up hearing the noise. Hidimba introduced herself, and declared her love for Bhima.

शोर सुनकर अन्य पांडव जाग गए। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

She told Kunti: "I have forsaken my friends, my dharma and my kin; and good lady, chosen your tiger-like son for my man ... whether you think me a fool, or your devoted servant, let me join you, great lady, with your son as my husband."

वह कुंती से बोली : "हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बांधव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया है.. चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।"

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Ultimately, Yudhisthira agreed to the marriage on condition that they would spend the day together but that Bhima would return every night. The couple roamed all over the world during the day

अंततः युधिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जाएँगे। यह दंपति दिन भर सभी लोकों की सैर करते।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

In due course Hidimba gave birth to a rakshasa boy named Ghatotkacha. Then the mother and son left the Pandavas. Ghatotkacha promised to return to the Pandavas whenever they needed him.

Some historians suggest that the term rakshasa is used to describe people whose practices differed from those laid down in Brahmanical texts.

समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पश्चात माँ और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गए किंतु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी ज़रूरत होगी वह उपस्थित हो जाएगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता था जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmanas considered some people as being outside the system, they also developed a sharper social divide by classifying certain social categories as "untouchable"

ब्राह्मण कुछ लोगों को वर्ण व्यवस्था वाली सामाजिक प्रणाली के बाहर मानते थे। साथ ही उन्होंने समाज के कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर सामाजिक वैषम्य को और अधिक प्रखर बनाया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

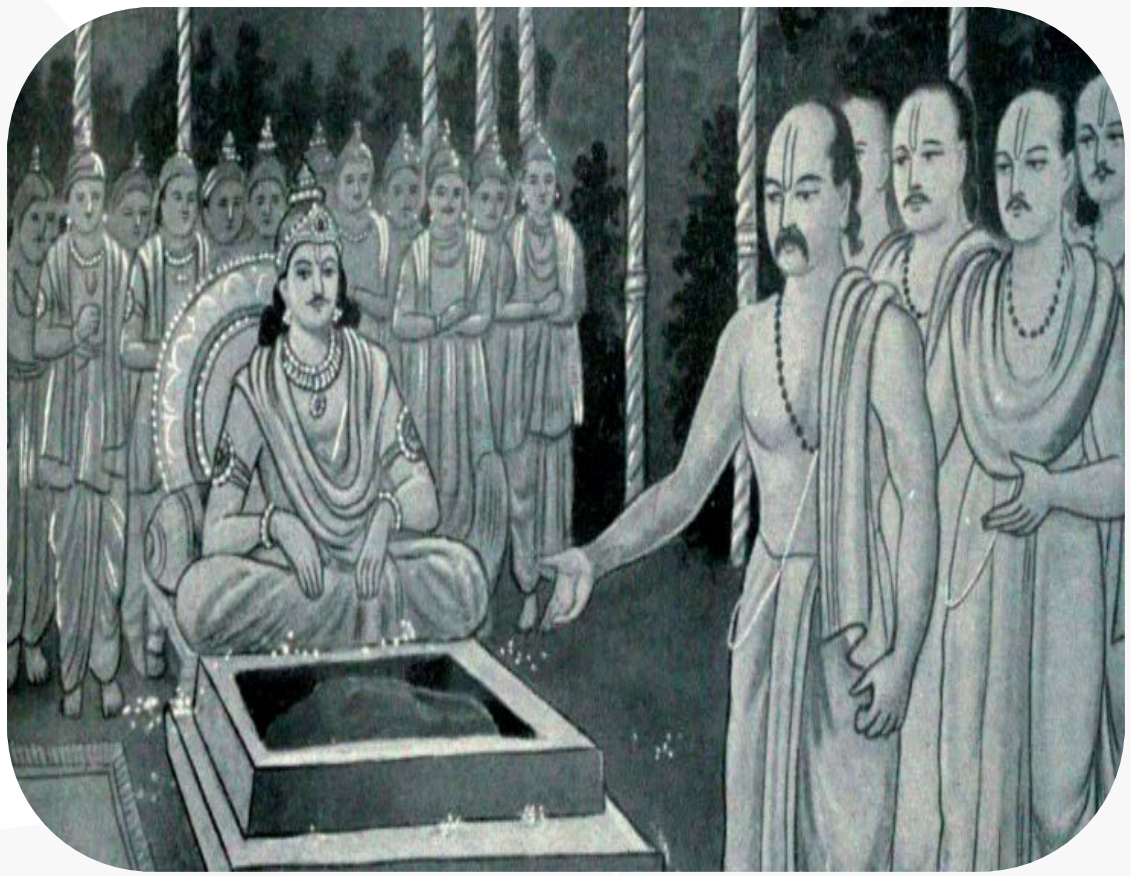

This rested on a notion that certain activities, especially those connected with the performance of rituals, were sacred and byextension "pure".

ब्राह्मणों का यह मानना था कि कुछ कर्म, खासतौर से वे जो अनुष्ठानों के संपादन से जुड़े थे, पुनीत और 'पवित्र' थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Those who considered themselves pure avoided taking food from those they designated as "untouchable".

अत: अपने को पवित्र मानने वाले लोग अस्पृश्यों से भोजन नहीं स्वीकार करते थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Some activities were regarded as particularly "polluting". These included handling corpses and dead animals. Those who performed such tasks, designated as chandalas, were placed at the very bottom of the hierarchy.

कुछ कार्य ऐसे थे जिन्हें खासतौर से 'दूषित' माना जाता था। शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को चाण्डाल कहा जाता था। उन्हें वर्ण व्यवस्था वाले समाज में सबसे निम्न कोटि में रखा जाता था।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Manusmriti laid down the "duties" of the chandalas. They had to live outside the village, use discarded utensils, and wear clothes of the dead and ornaments of iron.

मनुस्मृति में चाण्डालों के 'कर्तव्यों' की सूची मिलती है। उन्हें गाँव के बाहर रहना होता था। वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Depiction of a mendicant seeking alms, stone sculpture (Gandhara) c. third century, CE

एक भिक्षु का चित्रण, पत्थर की मूर्ति (गांधार) लगभग तीसरी शताब्दी ईसवी

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

They could not walk about in villages and cities at night

रात्रि में वे गाँव और नगरों में चल-फिर नहीं सकते थे।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The Bodhisatta as a chandala

Did chandalas resist the attempts to push them to the bottom of the social order? Read this story, which is part of the Matanga Jataka, a Pali text, where the Bodhisatta (the Buddha in a previous birth) is identified as a chandala

बोधिसत्त एक चाण्डाल के रूप में

क्या चाण्डालों ने अपने को समाज की सबसे निचली श्रेणी में रखे जाने का प्रतिरोध किया? यह कहानी पढ़िए जो पालि में लिखी मातंग जातक से ली गई है। इस कथा में बोधिसत्त (पूर्वजन्म में बुद्ध) एक चाण्डाल के रूप में चित्रित हैं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Once, the Bodhisatta was born outside the city of Banaras as a chandala's son and named Matanga. One day, when he had gone to the city on some work, he encountered Dittha Mangalika, the daughter of a merchant

एक बार बोधिसत्त ने बनारस नगर के बाहर एक चाण्डाल के पुत्र के रूप में जन्म लिया, उनका नाम मातंग था। एक दिन वे किसी कार्यवश नगर में गए और वहाँ उनकी मुलाकात दिथ्थ मांगलिक नामक एक व्यापारी की पुत्री से हुई।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

When she saw him, she exclaimed "I have seen something inauspicious" and washed her eyes. The angry hangers-on then beat him up. In protest, he went and lay down at the door of her father's house.

उन्हें देखकर वह चिल्लाई "मैंने कुछ अशुभ देख लिया है।" यह कहकर उसने अपनी आँखें धोईं। उसके क्रोधित सेवकों ने मातंग की पिटाई की। विरोध में मातंग व्यापारी के घर के दरवाज़े के बाहर जाकर लेट गए।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

On the seventh day they brought out the girl and gave her to him. She carried the starving Matanga back to the chandala settlement. Once he returned home, he decided to renounce the world. After attaining spiritual powers, he returned to Banaras and married her

दिथ्थ उपवास से क्षीण हुए मातंग को लेकर चाण्डाल बस्ती में आई। घर लौटने पर मातंग ने संसार त्यागने का निर्णय लिया। अलौकिक शक्ति हासिल करने के उपरांत वह बनारस लौटे और उन्होंने दिथ्थ से विवाह कर लिया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A son named Mandavya Kumara was born to them. He learnt the three Vedas as he grew up and began to provide food to 16,000 Brahmanas every day.

One day, Matanga, dressed in rags, with a clay alms bowl in his hand, arrived at his son's doorstep and begged for food.

माण्डव्यकुमार नामक उनका एक पुत्र हुआ। बड़े होने पर उसने तीन वेदों का अध्ययन किया तथा प्रत्येक दिन वह 16ए000 ब्राह्मणों को भोजन कराता था।

एक दिन फटे वस्त्र पहने तथा मिट्टी का भिक्षा पात्र हाथ में लिए मातंग अपने पुत्र के दरवाज़े पर आए और उन्होंने भोजन माँगा।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mandavya replied that he looked like an outcaste and was unworthy of alms; the food was meant for the Brahmanas. Matanga said: "Those who are proud of their birth and are ignorant do not deserve gifts. On the contrary, those who are free from vices are worthy of offerings."

माण्डव्य ने कहा कि वे एक पतित आदमी प्रतीत होते हैं अतः भिक्षा के योग्य नहीं, भोजन ब्राह्मणों के लिए है। मातंग ने उत्तर दिया, "जिन्हें अपने जन्म पर गर्व है पर अज्ञानी हैं वे भेंट के पात्र नहीं हैं। इसके विपरीत जो लोग दोषमुक्त हैं वे भेंट के योग्य हैं।"

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mandavya lost his temper and asked his servants to throw the man out. Matanga rose in the air and disappeared. When Dittha Mangalika learnt about the incident, she followed Matanga and begged his forgiveness. He asked her to take a bit of the leftover from his bowl and give it to Mandavya and the Brahmanas ...

माण्डव्य ने क्रोधित होकर अपने सेवकों से मातंग को घर से बाहर निकालने को कहा। मातंग आकाश में जाकर अदृश्य हो गए। जब दिथ्थ मांगलिक को इस प्रसंग के बारे में पता चला तो वह उनसे माफ़ी माँगने के लिए उनके पीछे आई। मातंग ने उससे कहा कि वह उनके भिक्षा पात्र में बचे हुए भोजन का कुछ अंश माण्डव्य तथा ब्राह्मणों को दे दें...

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Draupadi's question

Draupadi is supposed to have asked Yudhisthira whether he had lost himself before staking her. Two contrary opinions were expressed in response to this question.

द्रौपदी के प्रश्न

ऐसा माना जाता है कि द्रौपदी ने युधिष्ठिर से यह प्रश्न किया था कि वह उसे दाँव पर लगाने से पहले स्वयं को हार बैठे थे अथवा नहीं। इस प्रश्न के उत्तर में दो भिन्न मतों को प्रस्तुत किया गया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

One, that even if Yudhisthira had lost himself earlier, his wife remained under his control, so he could stake her.

प्रथम तो यह कि यदि युधिष्ठिर ने स्वयं को हार जाने के पश्चात द्रौपदी को दाँव पर लगाया तो यह अनुचित नहीं क्योंकि पत्नी पर पति का नियंत्रण सदैव रहता है।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Two, that an unfree man (as Yudhisthira was when he had lost himself) could not stake another person.

The matter remained unresolved; ultimately, Dhritarashtra restored to the Pandavas and Draupadi their personal freedom.

दूसरा यह कि एक दासत्व स्वीकार करने वाला पुरुष (जैसे उस क्षण युधिष्ठिर थे) किसी और को दाँव पर नहीं लगा सकता।

इन मुद्दों का कोई निष्कर्ष नहीं निकला और अंततः धृतराष्ट्र ने सभी पांडवों और द्रौपदी को उनकी निजी स्वतंत्रता पुनः लौटा दी।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Beyond Birth (Resources and Status)

जन्म के परे (संसाधन और प्रतिष्ठा)

According to the Manusmriti, the paternal estate was to be divided equally amongst sons after the death of the parents, with a special share for the eldest. Women could not claim a share of these resources.

मनुस्मृति के अनुसार पैतृक ज़ायदाद का माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए किंतु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियाँ इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थीं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

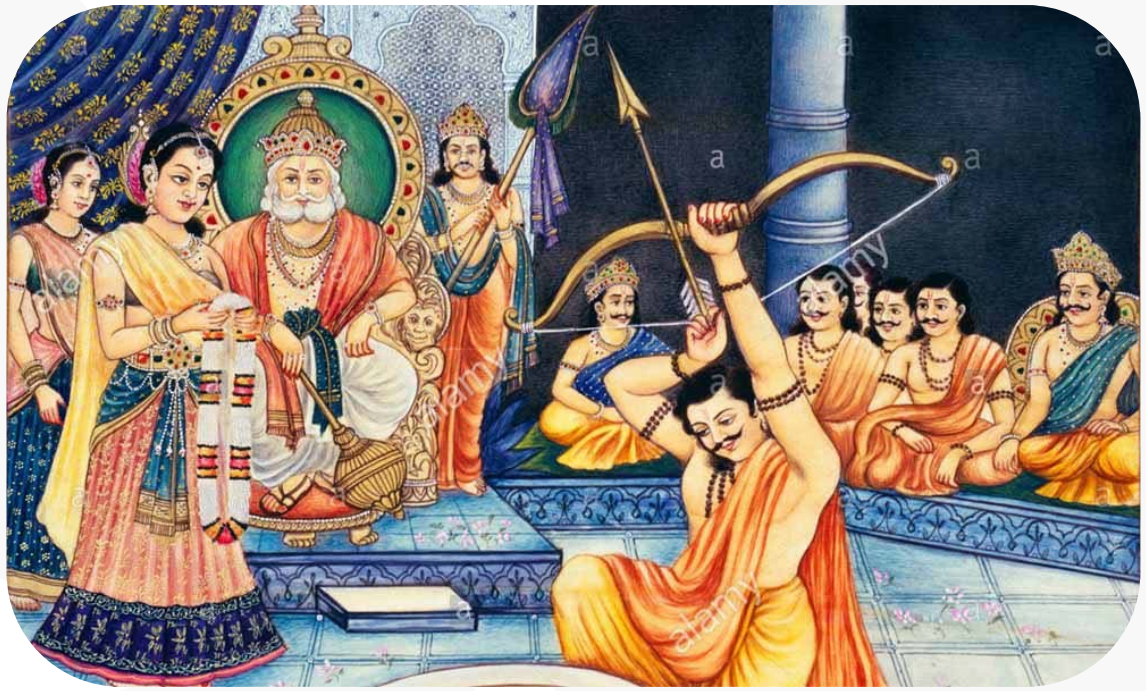

Women were allowed to retain the gifts they received on the occasion of their marriage as stridhana (literally, a woman's wealth)

विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन (अर्थात् स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

At the same time, the Manusmriti warned women against hoarding family property, or even their own valuables, without the husband's permission.

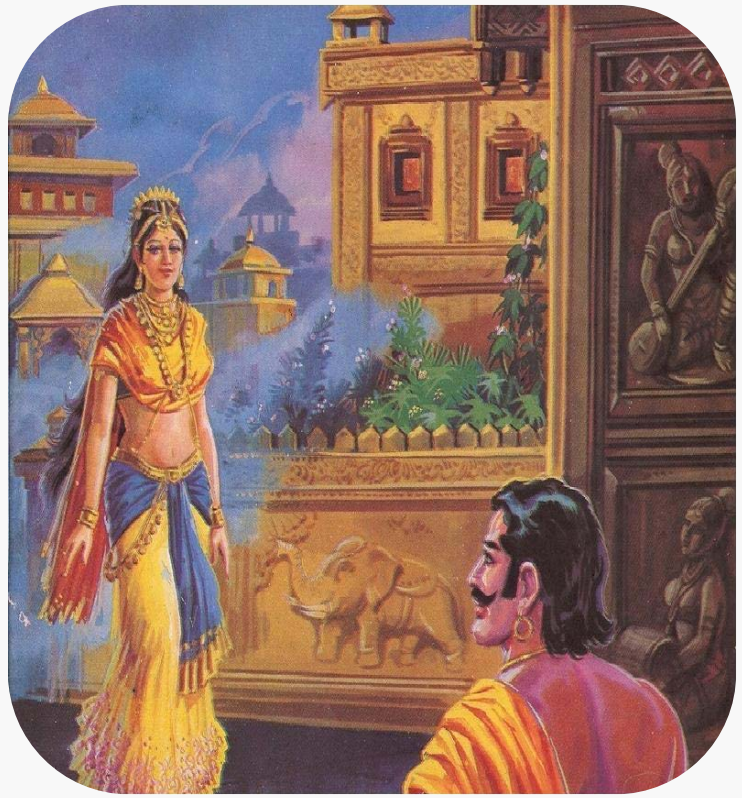

मनुस्मृति स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरुद्ध पारिवारिक संपत्ति अथवा स्वयं अपने बहुमूल्य धन के गुप्त संचय के विरुद्ध भी चेतावनी देती है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Cumulative evidence – both epigraphic and textual – suggests that while upper-class women may have had access to resources, land, cattle and money were generally controlled by men.

साक्ष्य–अभिलेखीय व साहित्यिक–इस बात की ओर इशारा करते हैं कि यद्यपि उच्च वर्ग की महिलाएँ संसाधनों पर अपनी पैठ रखती थीं, सामान्यतः भूमि, पशु और धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

How could men and women acquire wealth?

For men, the Manusmriti declares, there are seven means of acquiring wealth: inheritance, finding, purchase, conquest, investment, work, and acceptance of gifts from good people.

स्त्री और पुरुष किस प्रकार संपत्ति अर्जित कर सकते थे?

पुरुषों के लिए मनुस्मृति कहती है कि धन अर्जित करने के सात तरीके हैं : विरासत, खोज, खरीद, विजित करके, निवेश, कार्य द्वारा तथा सज्जनों द्वारा दी गई भेंट को स्वीकार करके।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

For women, there are six means of acquiring wealth: what was given in front of the fire (marriage) or the bridal procession, or as a token of affection, and what she got from her brother, mother or father. She could also acquire wealth through any subsequent gift and whatever her "affectionate" husband might give her.

स्त्रियों के लिए संपत्ति अर्जन के छः तरीके हैं : वैवाहिक अग्नि के सामने तथा वधूगमन के समय मिली भेंट। स्नेह के प्रतीक के रूप में तथा भ्राता, माता और पिता द्वारा दिए गए उपहार। इसके अतिरिक्त परवर्ती काल में मिली भेंट तथा वह सब कुछ जो "अनुरागी" पति से उसे प्राप्त हो।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

According to the Brahmanical texts, another criterion (apart from gender) for regulating access to wealth was varna.

ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार (लैंगिक आधार के अतिरिक्त) वर्ण था।

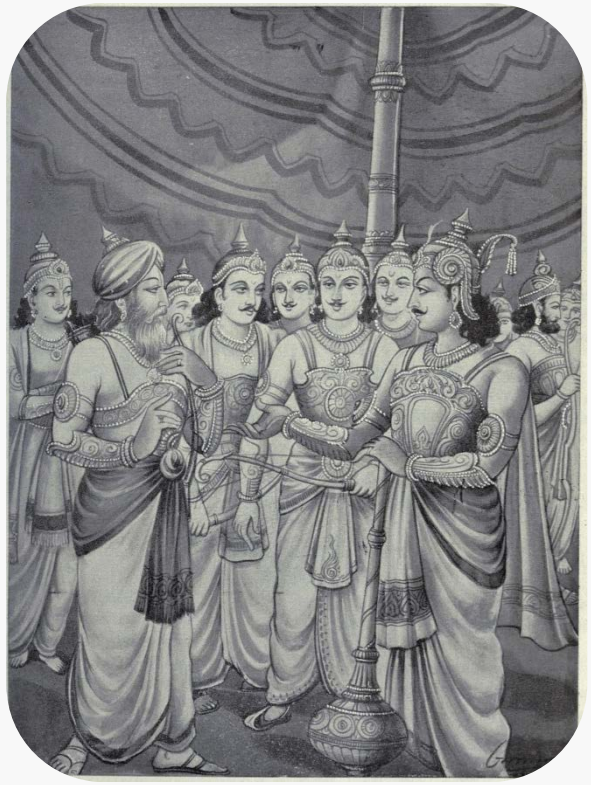

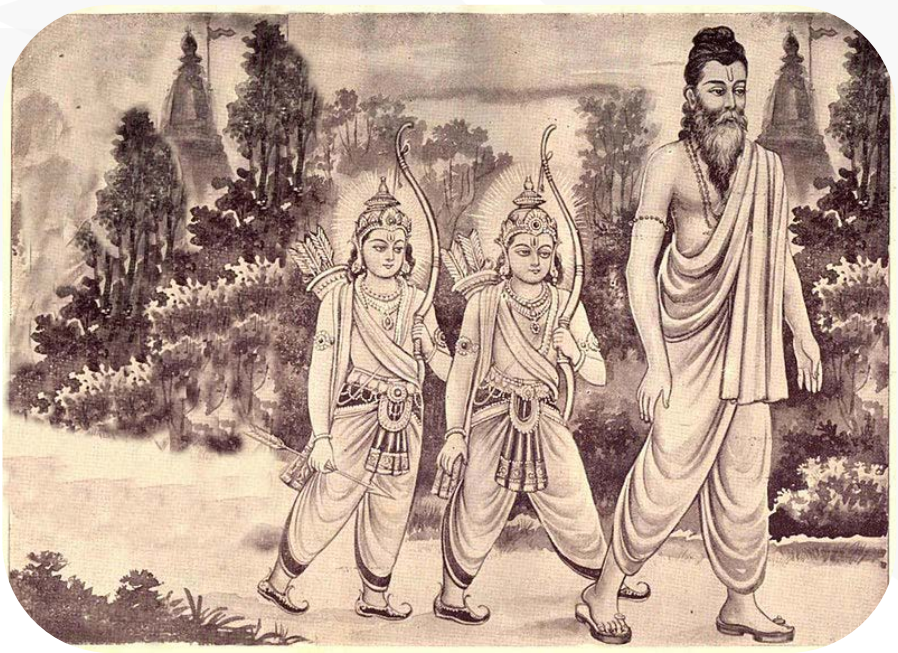

The wealthiest men would have been the Brahmanas and the Kshatriyas.

ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The Buddhists recognised that there were differences in society, but did not regard these as natural or inflexible. They also rejected the idea of claims to status on the basis of birth.

बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थायी। बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The wealthy Shudra

This story, based on a Buddhist text in Pali known as the Majjhima Nikaya, is part of a dialogue between a king named Avantiputta and a disciple of the Buddha named Kachchana. While it may not be literally true, it reveals Buddhist attitudes towards varna.

एक धनाढय शूद्र

यह कहानी पालि भाषा के बौद्ध ग्रंथ मज्झिमनिकाय से है जो एक राजा अवन्तिपुत्र और बुद्ध के अनुयायी कच्चन के बीच हुए संवाद का हिस्सा है। यद्यपि यह कहानी अक्षरशः सत्य नहीं थी तथापि यह बौद्धों के वर्ण संबंधी रवैये को दर्शाती है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Avantiputta asked Kachchana what he thought about Brahmanas who held that they were the best caste and that all other castes were low; that Brahmanas were a fair caste while all other castes were dark; that only Brahmanas were pure, not non-Brahmanas; that Brahmanas were sons of Brahma, born of his mouth, born of Brahma, formed by Brahma, heirs to Brahma.

अवन्तिपुत्र ने कच्चन से पूछा कि ब्राह्मणों के इस मत के बारे में उनकी क्या राय है, कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं और अन्य जातियाँ निम्न कोटि की हैं; ब्राह्मण का वर्ण शुभ्र है और अन्य जातियाँ काली हैं; केवल ब्राह्मण पवित्र हैं अन्य नहीं; ब्राह्मण ब्रह्मा के पुत्र हैं, ब्रह्मा के मुख से जन्मे हैं, उनसे ही रचित हैं तथा ब्रह्मा के वंशज हैं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Kachchana replied: "What if a Shudra were wealthy ... would another Shudra ...or a Kshatriya or a Brahmana or a Vaishya ... speak politely to him?"

कच्चन ने उत्तर दिया: "क्या यदि शूद्र धनी होता... दूसरा शूद्र... अथवा क्षत्रिय या फिर ब्राह्मण अथवा वैश्य... उससे विनीत स्वर में बात करता?"

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Avantiputta replied that if a Shudra had wealth or corn or gold or silver, he could have as his obedient servant another Shudra to get up earlier than he, to go to rest later, to carry out his orders, to speak politely; or he could even have a Kshatriya or a Brahmana or a Vaishya as his obedient servant.

अवन्तिपुत्र ने प्रत्युत्तर में कहा कि यदि शूद्र के पास धन अथवा अनाज, स्वर्ण या फिर रजत होती वह दूसरे शूद्र को अपने आज्ञाकारी सेवक के रूप में प्राप्त कर सकता था, जो उससे पहले उठे और उसके बाद विश्राम करे; जो उसकी आज्ञा का पालन करे, विनीत वचन बोले; अथवा वह क्षत्रिय, ब्राह्मण या फिर वैश्य को भी आज्ञावाही सेवक बना सकता था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Kachchana asked: "This being so, are not these four varnas exactly the same?"

Avantiputta conceded that there was no difference amongst the varnas on this count.

कच्चन ने पूछा, "यदि ऐसा है, तो क्या फिर यह चारों वर्ण एकदम समान नहीं हैं?"

अवन्तिपुत्र ने यह स्वीकार किया कि इस आधार पर चारों वर्णों में कोई भेद नहीं है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Where men who were generous were respected, while those who were miserly or simply accumulated wealth for themselves were despised. One area where these values were cherished was ancient Tamilakam

जहाँ दानशील आदमी का सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति अथवा वह जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था, घृणा का पात्र होता था। प्राचीन तमिलकम् एक ऐसा ही क्षेत्र था जहाँ उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Poems included in the Tamil Sangam anthologies often illuminate social and economic relationships, suggesting that while there were differences between rich and poor, those who controlled resources were also expected to share them.

तमिल भाषा के संगम साहित्यिक संग्रह में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है कि हालाँकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएँ थीं, जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे मिल-बाँट कर उसका उपयोग करेंगे।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The poor generous chief

In this composition from the Puranaruru, one of the anthologies of poems of the Tamil Sangam literature (c. first century CE), a bard describes his patron to other poets thus :

निर्धन दानी सरदार

यह रचना पुरुनारुरू से उद्धृत है जो तमिल संगम साहित्य (लगभग प्रथम शताब्दी ईसवी) की एक पद्यावली है। इस रचना में एक चारण अपने आश्रयदाता का चित्रण अन्य कवियों के समक्ष इस भाँति कर रहा है :

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

He (i.e. the patron) doesn't have the wealth to lavish on others everyday

Nor does he have the pettiness to say that he has nothing and so refuse! ...

यह रचना पुरुनारुरू से उसके (अर्थात् आश्रयदाता) पास हर रोज़ दूसरों पर खर्चा करने के लिए धन नहीं है।

किंतु वह इतना ओछा भी नहीं है कि यह कहकर, कि मेरे पास कुछ नहीं है, दान देने से मना कर दे!...

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

He lives in Irantai (a place) and is generous. He is an enemy to the hunger of bards!

If you wish to cure your poverty, come along with me, bards whose lips are so skilled!

वह इरंतई (एक स्थान) में रहता है और दानप्रिय है। वह चारणों की क्षुधा का शत्रु है।

यदि तुम अपनी गरीबी को समाप्त करना चाहो तो मेरे साथ आओ, तुम सभी चारण जिनके होंठ इतने दक्ष हैं!

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

If we request him, showing him our ribs thin with hunger, he will go to the blacksmith of his village And will say to that man of powerful hands:

“Shape me a long spear for war, one that has a straight blade!”

यदि हम उससे प्रार्थना करेंगे और अपनी भूख से क्षीण हुई पसलियाँ उसे दिखाएँगे, तो वह अपने गाँव के लोहार के पास जाएगा और उस सक्षम हाथ वाले से कहेगा:

“मुझे युद्ध के लिए एक लंबा भाला तैयार कर दो, एक ऐसा भाला जिसका सीधा फलक हो!”

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A chief and his follower, stone sculpture, Amaravati (Andhra Pradesh), c. second century CE

एक सरदार और उसका अनुयायी; पत्थर की मूर्ति, अमरावती (आंध्र प्रदेश) लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Explaining Social Differences: A Social Contract

सामाजिक विषमताओं की व्याख्या: एक सामाजिक अनुबंध

Sutta Pitaka they suggested that originally human beings did not have fully evolved bodily forms, nor was the world of plants fully developed. All beings lived in an idyllic state of peace, taking from nature only what they needed for each meal.
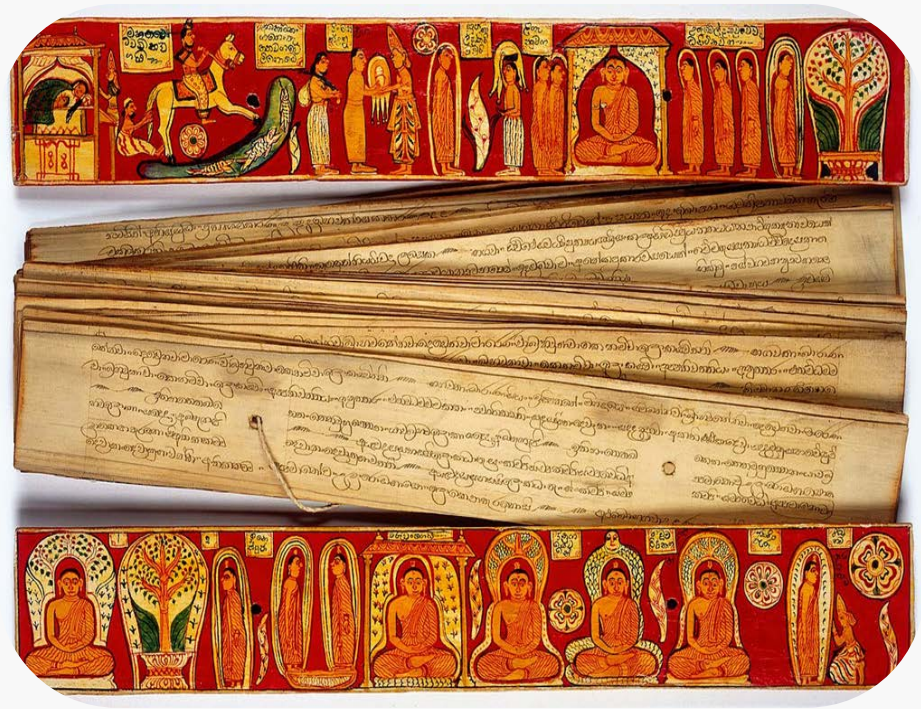
सुत्तपिटक नामक ग्रंथ में एक मिथक वर्णित है जो यह बताता है कि प्रारंभ में मानव पूर्णतया विकसित नहीं थे। वनस्पति जगत भी अविकसित था। सभी जीव शांति के एक निर्बाध लोक में रहते थे और प्रकृति से उतना ही ग्रहण करते थे जितनी एक समय के भोजन की आवश्यकता होती है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

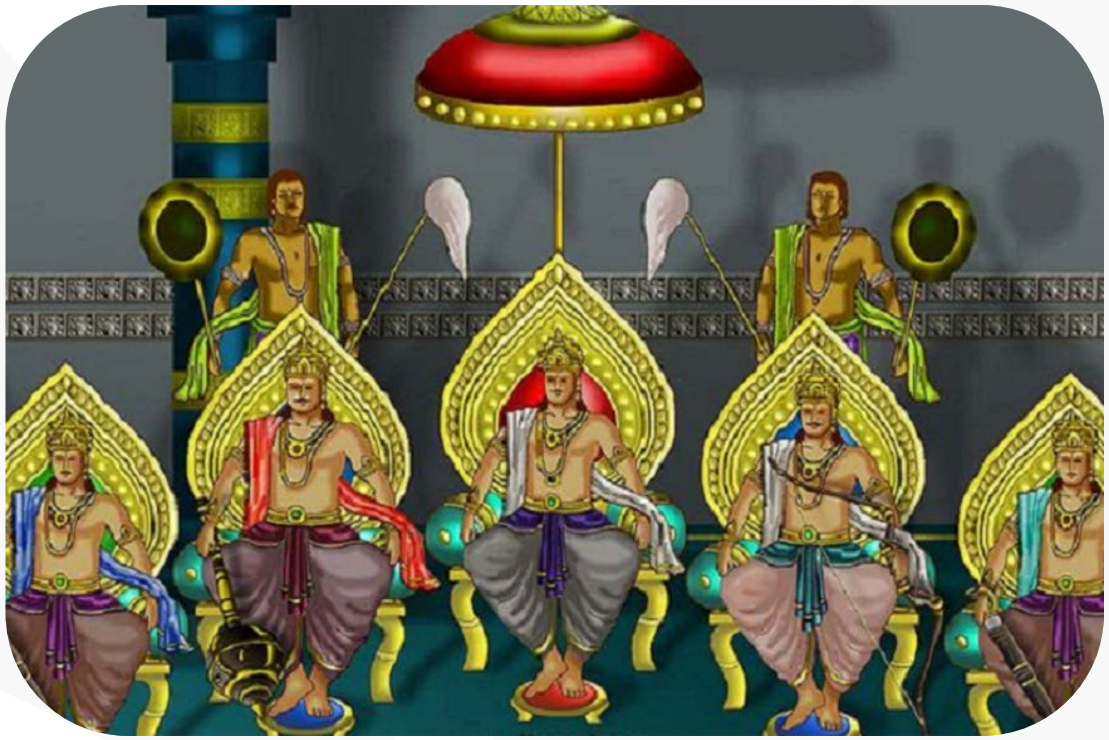

Kingship was based on human choice, with taxes as a form of payment for services rendered by the king.

राजा का पद लोगों द्वारा चुने जाने पर निर्भर करता था। 'कर' वह मूल्य था जो लोग राजा की इस सेवा के बदले उसे देते थे।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Handling Texts Historians and the Mahabharata

साहित्यिक स्रोतों का इस्तेमाल इतिहासकार और महाभारत

Historians

इतिहासकार

Analyse texts

ग्रंथ का विश्लेषण

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Examine whether texts were written in Prakrit, Pali or Tamil, languages that were probably used by ordinary people, or in Sanskrit, a language meant almost exclusively for priests and elites

इस बात का परीक्षण करते हैं कि ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया : पालि, प्राकृत अथवा तमिल, जो आम लोगों द्वारा बोली जाती थी अथवा संस्कृत जो विशिष्ट रूप से पुरोहितों और खास वर्ग द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी।

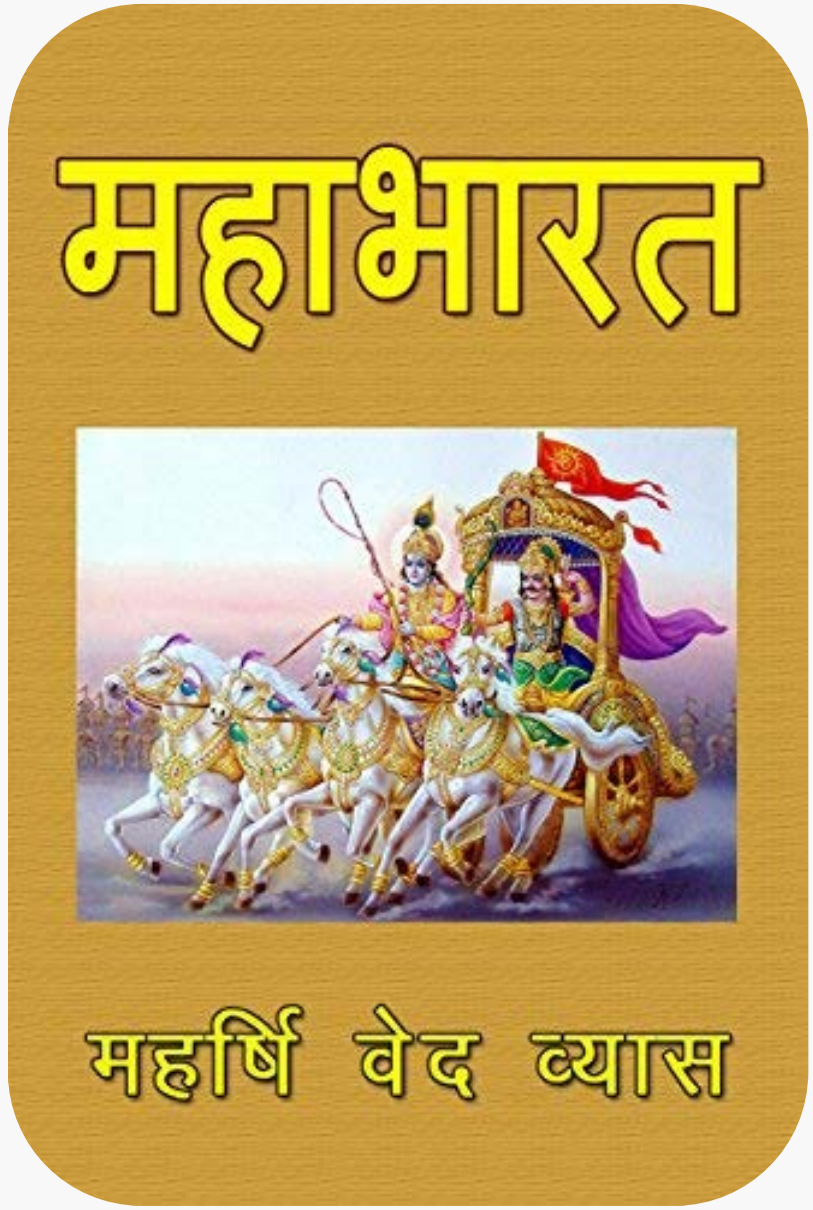

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

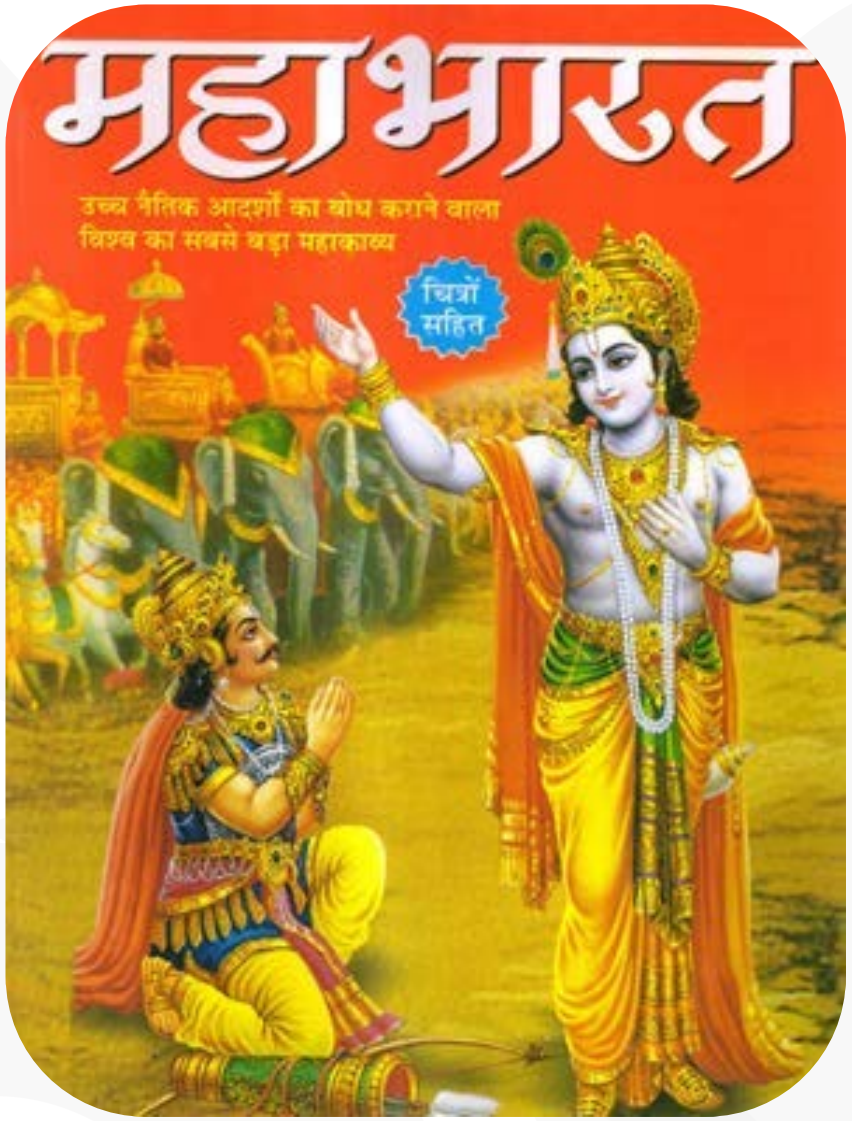

Also consider the kinds of text. Were these mantras, learnt and chanted by ritual specialists, or stories that people could have read, or heard, and then retold if they found them interesting?

इतिहासकार ग्रंथ के प्रकार पर भी ध्यान देते हैं। क्या यह ग्रंथ 'मंत्र' थे जो अनुष्ठानकर्ताओं द्वारा पढ़े और उच्चरित किए जाते थे अथवा ये 'कथा' ग्रंथ थे जिन्हें लोग पढ़ और सुन सकते थे तथा दिलचस्प होने पर जिन्हें दुबारा सुनाया जा सकता था?

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

They try to find out about the author(s) whose perspectives and ideas shaped the text, as well as the intended audience, as, very often, authors keep the interests of their audience in mind while composing their work

इतिहासकार लेखक(कों) के बारे में भी जानने का प्रयास करते हैं जिनके दृष्टिकोण और विचारों ने ग्रंथों को रूप दिया। इन ग्रंथों के श्रोताओं का भी इतिहासकार परीक्षण करते हैं क्योंकि लेखकों ने अपनी रचना करते समय श्रोताओं की अभिरुचि पर ध्यान दिया होगा।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

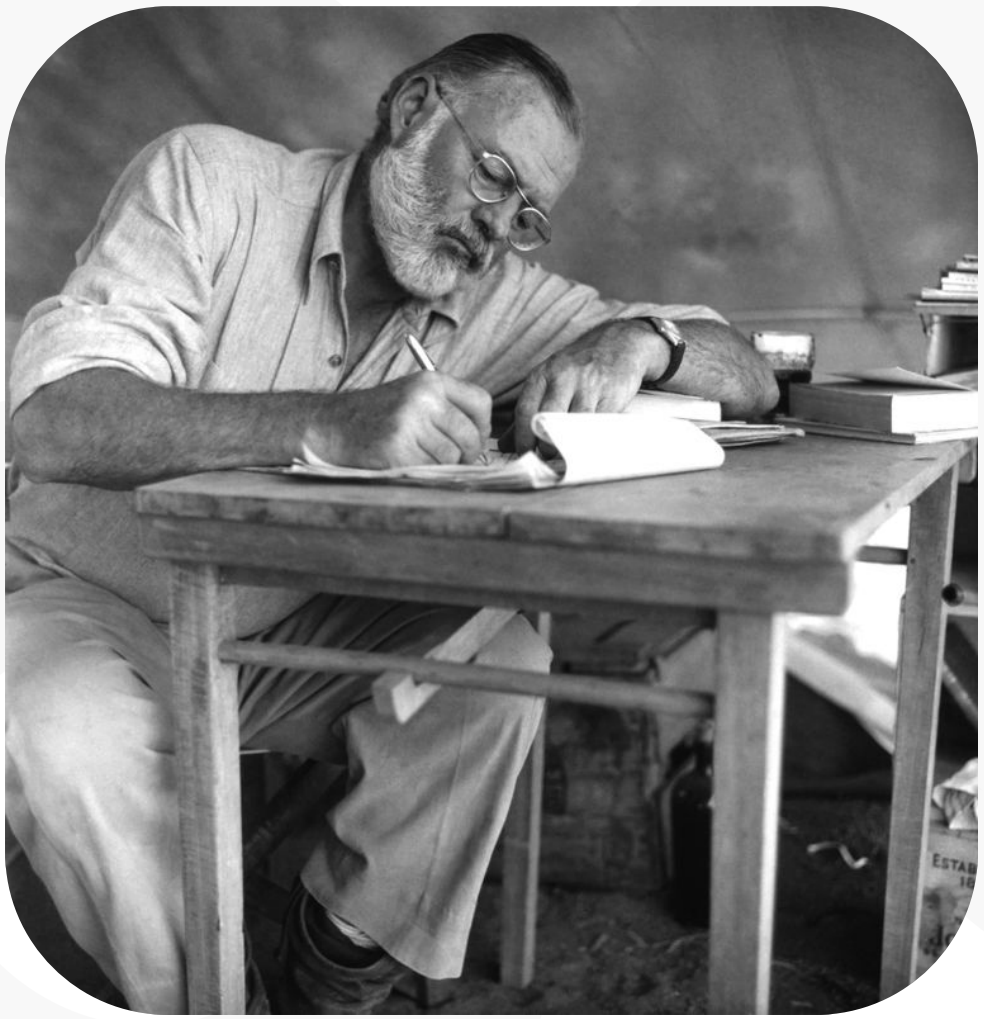

Try and ascertain the possible date of the composition or compilation of the texts as well as the place where they may have been composed.

इतिहासकार ग्रंथ के संभावित संकलन/रचना काल और उसकी रचनाभूमि का भी विश्लेषण करते हैं।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

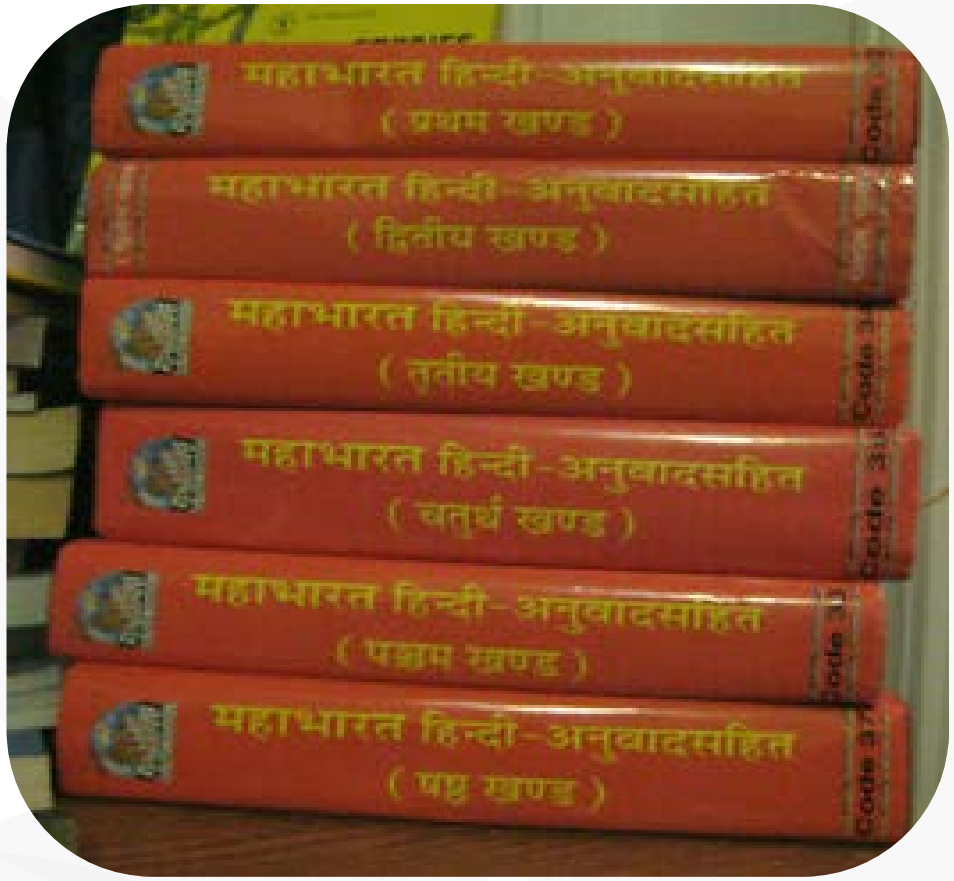

Language of the text

ग्रंथ की भाषा

Mahabharata

महाभारत

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

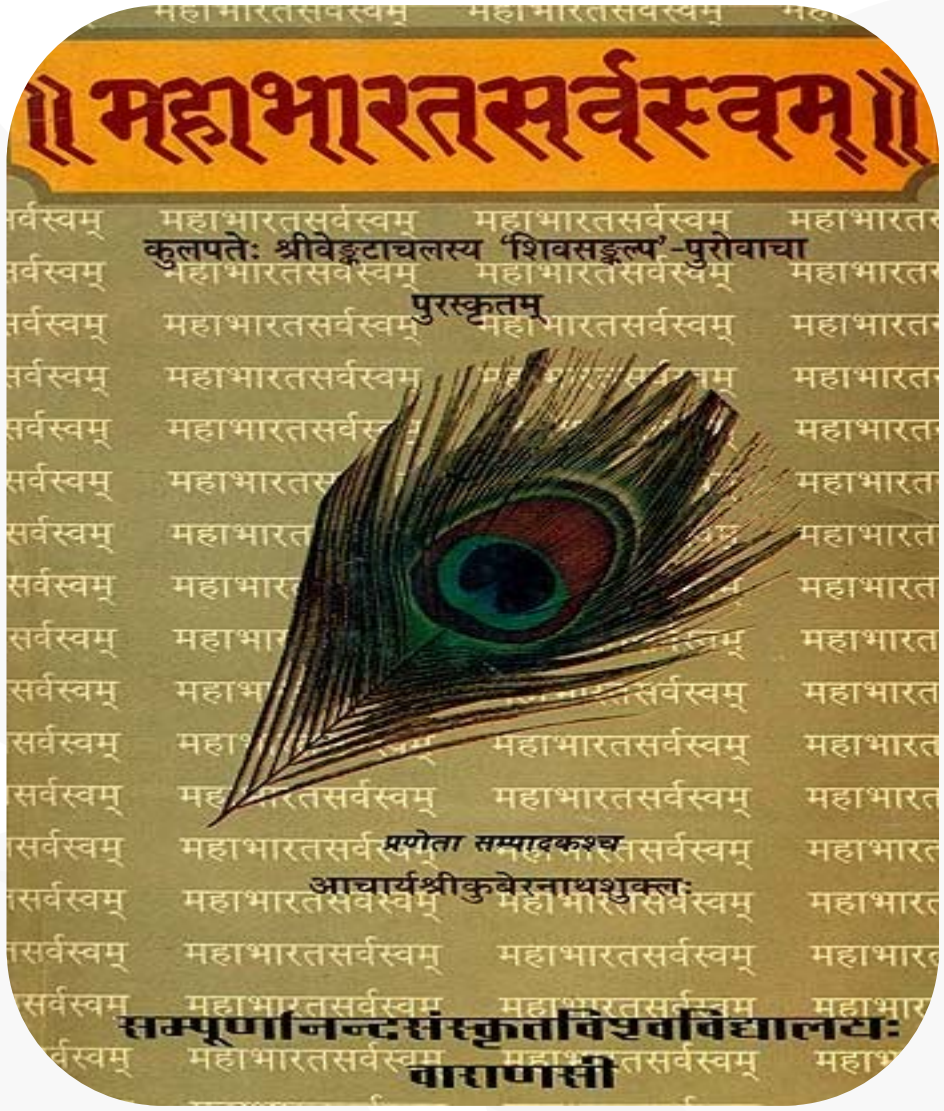

Sanskrit

संस्कृत

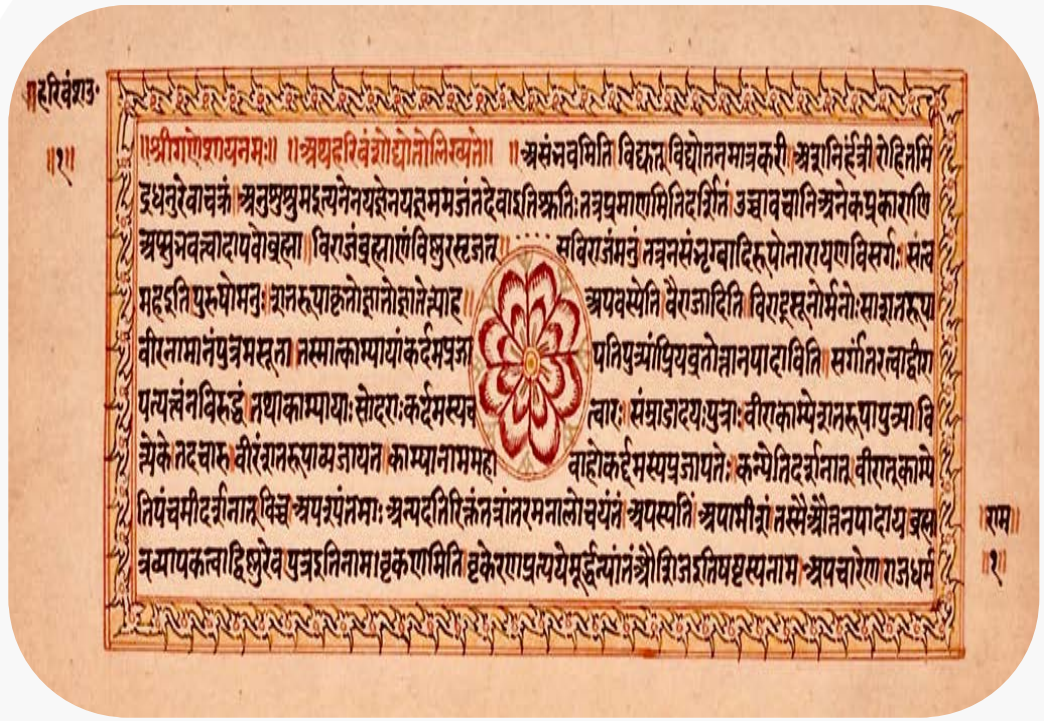

Sanskrit used in the Mahabharata is far simpler than that of the Vedas

महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों अथवा प्रशस्तियों की संस्कृत से कहीं अधिक सरल है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Historians usually classify the contents of the present text under two broad heads – sections that contain stories, designated as the narrative, and sections that contain prescriptions about social norms, designated as didactic.

इतिहासकार इस ग्रंथ की विषयवस्तु को दो मुख्य शीर्षकों – आख्यान तथा उपदेशात्मक – के अंतर्गत रखते हैं। आख्यान में कहानियों का संग्रह है और उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार – विचार के मानदंडों का चित्रण है।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

This division is by no means watertight – the didactic sections include stories, and the narrative often contains a social message.

किंतु यह विभाजन पूरी तरह अपने में एकांकी नहीं है – उपदेशात्मक अंशों में भी कहानियाँ होती हैं और बहुधा आख्यानों में समाज के लिए एक सबक निहित रहता है।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Krishna advises Arjuna on the battlefield

श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए

This painting dates to the eighteenth century. Perhaps the most important didactic section of the Mahabharata is the Bhagavad Gita, which contains the advice offered by Lord Krishna to Arjuna. This scene is frequently depicted in painting and sculpture.

महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश भगवद्गीता है जहाँ कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं। इस दृश्य को चित्रों और मूर्तिकला में कई बार दर्शाया गया है। इस चित्र का काल अठारहवीं शताब्दी है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Didactic refers to something that is meant for purposes of instruction.

उपदेशात्मक शब्द का तात्पर्य है निर्देश अथवा शिक्षा देना।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Text is described as an itihasa within early Sanskrit tradition. The literal meaning of the term is "thus it was", which is why it is generally translated as "history".

आरंभिक संस्कृत परंपरा में महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है। इस शब्द का अर्थ है : 'ऐसा ही था।'

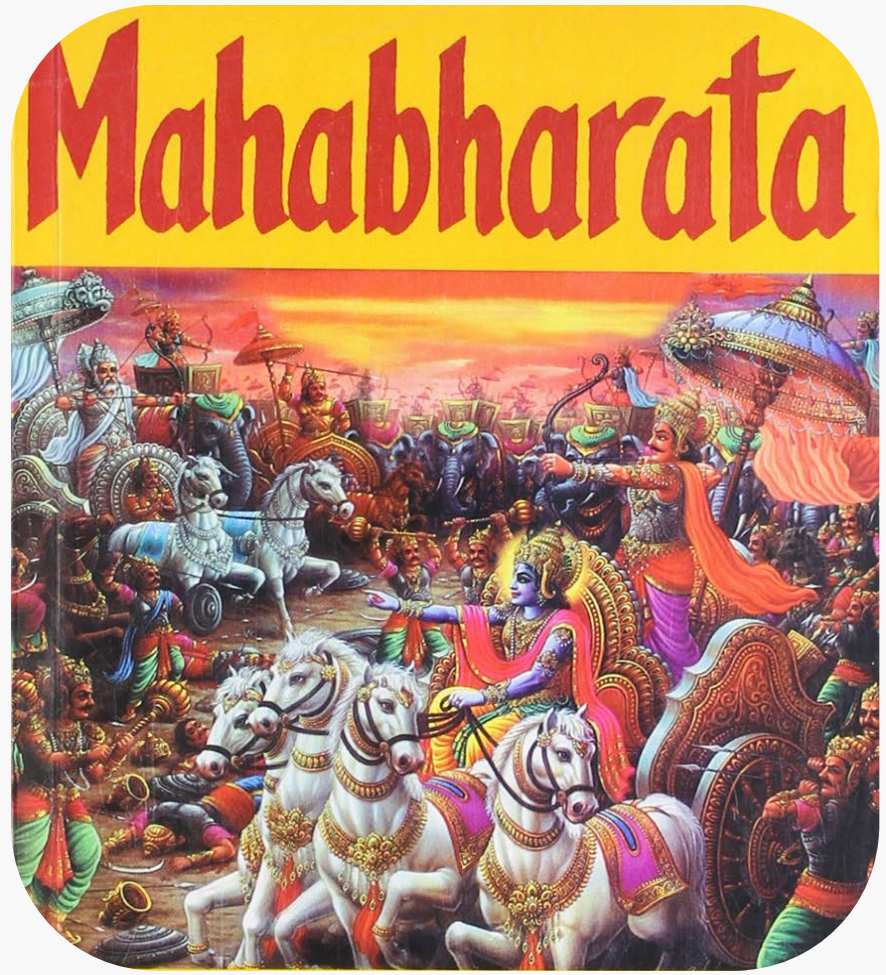

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The original story was probably composed by charioteer-bards known as sutas who generally accompanied Kshatriya warriors to the battlefield and composed poems celebrating their victories and other achievements. These compositions circulated orally.

संभवतः मूल कथा के रचयिता भाट सारथी थे जिन्हें 'सूत' कहा जाता था। ये क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्धक्षेत्र में जाते थे और उनकी विजय व उपलब्धियों के बारे में कविताएँ लिखते थे। इन रचनाओं का प्रेषण मौखिक रूप में हुआ।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Brahmanas took over the story and began to commit it to writing

ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखा।

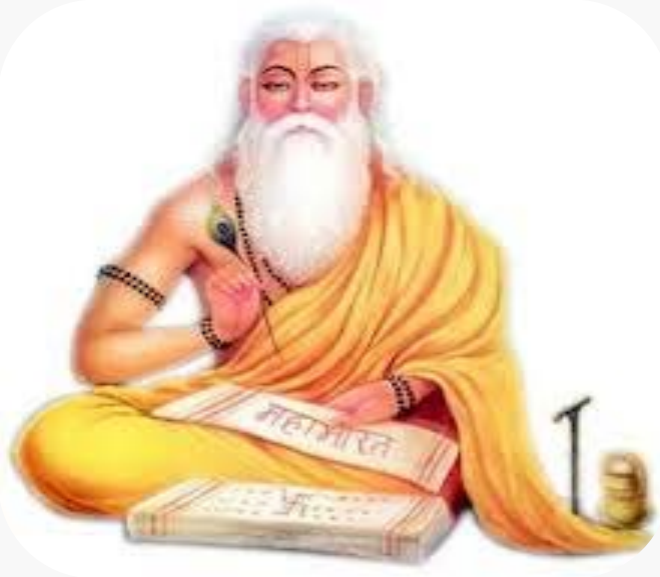

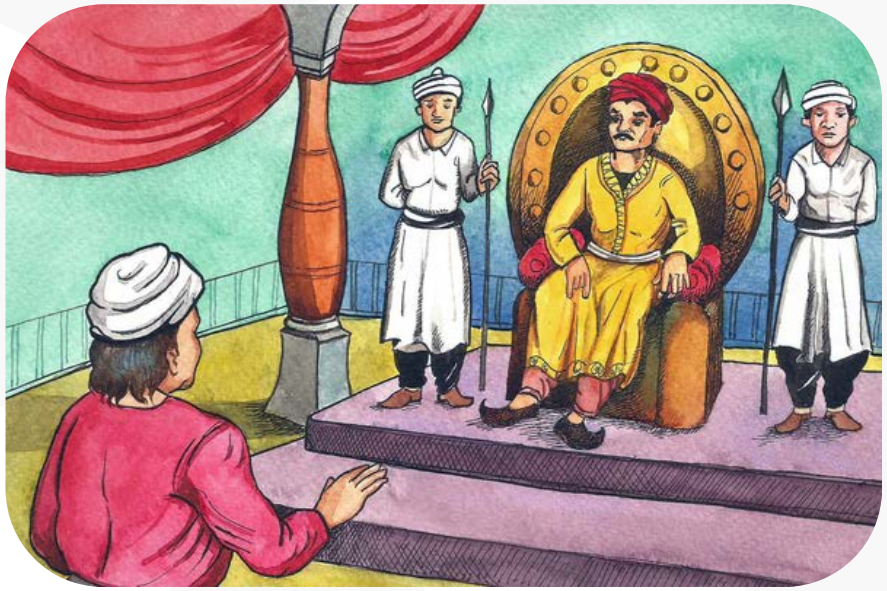

New kings want their itihasa to be recorded and preserved more systematically?

नए राजा अपने इतिहास को अधिक नियमित रूप से लिखना चाहते थे?

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Lord Ganesha the scribe
According to tradition, Vyasa dictated the text to the deity. This illustration is from a Persian translation of the Mahabharata, c. 1740-50.

लिपिक श्रीगणेश परंपरा के अनुसार व्यास ने इस ग्रंथ को श्रीगणेश को लिखवाया। यह चित्र महाभारत के फारसी अनुवाद (लगभग 1740.50) से लिया गया है।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mahabharata, like any major epic, contains vivid descriptions of battles, forests, palaces and settlements

महाभारत में अन्य किसी भी प्रमुख महाकाव्य की भाँति युद्धों, वनों, राजमहलों और बस्तियों का अत्यंत जीवंत चित्रण है।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Archaeologist B.B. Lal excavated at a village named Hastinapura in Meerut

पुरातत्ववेत्ता बी.बी. लाल ने मेरठ ज़िले के हस्तिनापुर नामक एक गाँव में उत्खनन किया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Hastinapura

This is how the city is described in the Adi Parvan of the Mahabharata:

हस्तिनापुर

महाभारत के आदिपर्वन् में इस नगर का चित्रण इस प्रकार मिलता है :

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The city, bursting like the ocean, packed with hundreds of mansions, displayed with its gateways, arches and turrets like massing clouds the splendour of Great Indra's city.

यह नगर जो समुद्र की भाँति भरा हुआ था, जो सैकड़ों प्रासादों से संकुलित था। इसके सिंहद्वार, तोरण और कंगूरे सघन बादलों की तरह घुमड़ रहे थे। यह इंद्र की नगरी के समान शोभायमान था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

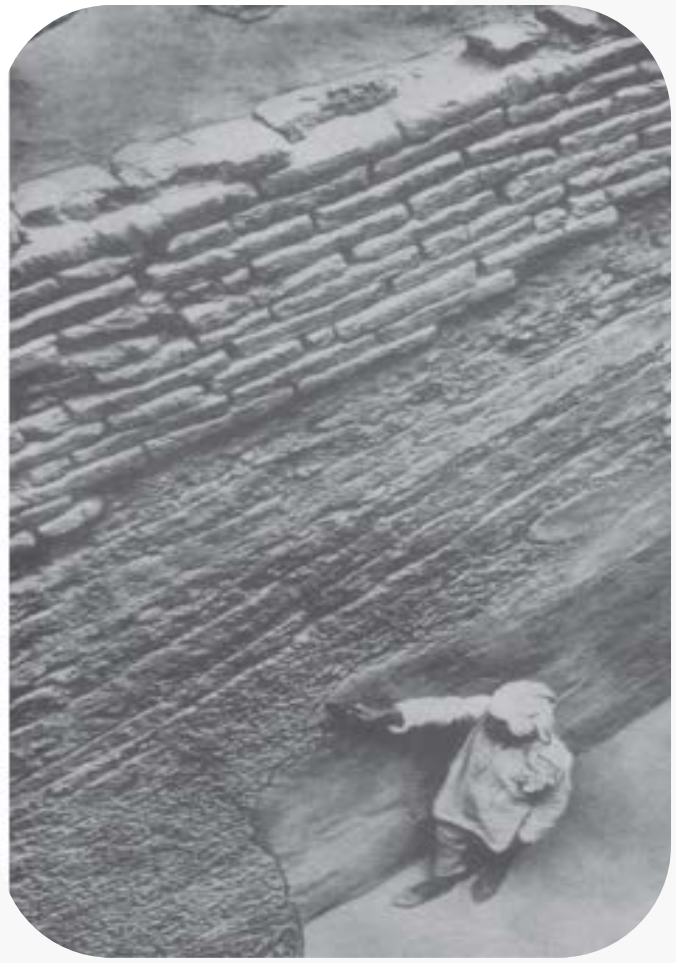

A wall excavated at Hastinapura

हस्तिनापुर में उत्खनित एक दीवार का अंश

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

❖ Draupadi's marriage

Drupada, the king of Panchala, organised a competition where the challenge was to string a bow and hit a target; the winner would be chosen to marry his daughter Draupadi. Arjuna was victorious and was garlanded by Draupadi.

❖ द्रौपदी का विवाह

पांचाल नरेश द्रुपद ने एक स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें यह शर्त रखी गई कि धनुष की चाप चढ़ा कर निशाने पर तीर मारा जाए; विजेता उनकी पुत्री द्रौपदी से विवाह करने के लिए चुना जाएगा। अर्जुन ने यह प्रतियोगिता जीती और द्रौपदी ने उसे वरमाला पहनाई।

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The Pandavas returned with her to their mother Kunti, who, even before she saw them, asked them to share whatever they had got. She realised her mistake when she saw Draupadi, but her command could not be violated. After much deliberation, Yudhisthira decided that Draupadi would be their common wife.

पांडव उसे लेकर अपनी माता कुंती के पास गए जिन्होंने बिना देखे ही उन्हें लाई गई वस्तु को आपस में बाँट लेने को कहा। जब कुंती ने द्रौपदी को देखा तो उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ, किंतु उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती थी। बहुत सोच-विचार के बाद युधिष्ठिर ने यह निर्णय लिया कि द्रौपदी उन पाँचों की पत्नी होगी।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

When Drupada was told about this, he protested. However, the seer Vyasa arrived and told him that the Pandavas were in reality incarnations of Indra, whose wife had been reborn as Draupadi, and they were thus destined for each other.

जब द्रुपद को यह बताया गया तो उन्होंने इसका विरोध किया। किंतु ऋषि व्यास ने उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि पांडव वास्तव में इंद्र के अवतार थे और उनकी पत्नी ने ही द्रौपदी के रूप में जन्म लिया था। अतः नियति ने ही उन सबका साथ निश्चित कर दिया था।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Vyasa added that in another instance a young woman had prayed to Shiva for a husband, and in her enthusiasm, had prayed five times instead of once. This woman was now reborn as Draupadi, and Shiva had fulfilled her prayers. Convinced by these stories, Drupada consented to the marriage.

व्यास ने यह भी बताया कि एक बार युवा स्त्री ने पति प्राप्ति के लिए शिव की आराधना की और उत्साह के अतिरेक में एक के बजाय पाँच बार पति प्राप्ति का वर माँग लिया। इसी स्त्री ने द्रौपदी के रूप में जन्म लिया तथा शिव ने उसकी प्रार्थना को परिपूर्ण किया है। इन कहानियों से संतुष्ट होकर द्रुपद ने इस विवाह को अपनी सहमति प्रदान की।

HISTORY
THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (c. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

A DYNAMIC TEXT

एक गतिशील ग्रंथ

The epic were written in a variety of languages through an ongoing process of dialogue between peoples, communities, and those who wrote the texts.

इस महाकाव्य के अनेक पाठान्तर भिन्न-भिन्न भाषाओं में लिखे गए। ये सब उस संवाद को दर्शाते थे जो इनके लेखकों, अन्य लोगों और समुदायों के बीच कायम हुए।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

The central story of the epic was often retold in different ways. And episodes were depicted in sculpture and painting.

इस महाकाव्य की मुख्य कथा की अनेक पुनर्व्याख्याएँ की गईं। इसके प्रसंगों को मूर्तिकला और चित्रों में भी दर्शाया गया।

HISTORY THEME 03

KINSHIP, CASTE AND CLASS EARLY SOCIETIES (C. 600 BCE-600 CE)

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज

Mahabharata that has been transformed by Mahashweta Devi, a contemporary Bengali writer known for raising her voice against all forms of exploitation and oppression.

महाभारत के एक प्रसंग का रूपांतरण समसामयिक बांग्ला लेखिका महाश्वेता देवी ने किया है, जो शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाने के लिए प्रसिद्ध हैं।

Thank You

So Much!